टबी और लालटेन

लेखक: एल पर्किन्स

चित्र-सज्जा: रोलैंड बी. विल्सन

हिंदी: योगेश

टबी और लालटेन

लेखक: एल पर्किन्स

चित्र-सज्जा: रोलैंड बी. विल्सन

हिंदी: योगेश

टबी एक बहुत नन्हा हाथी था।

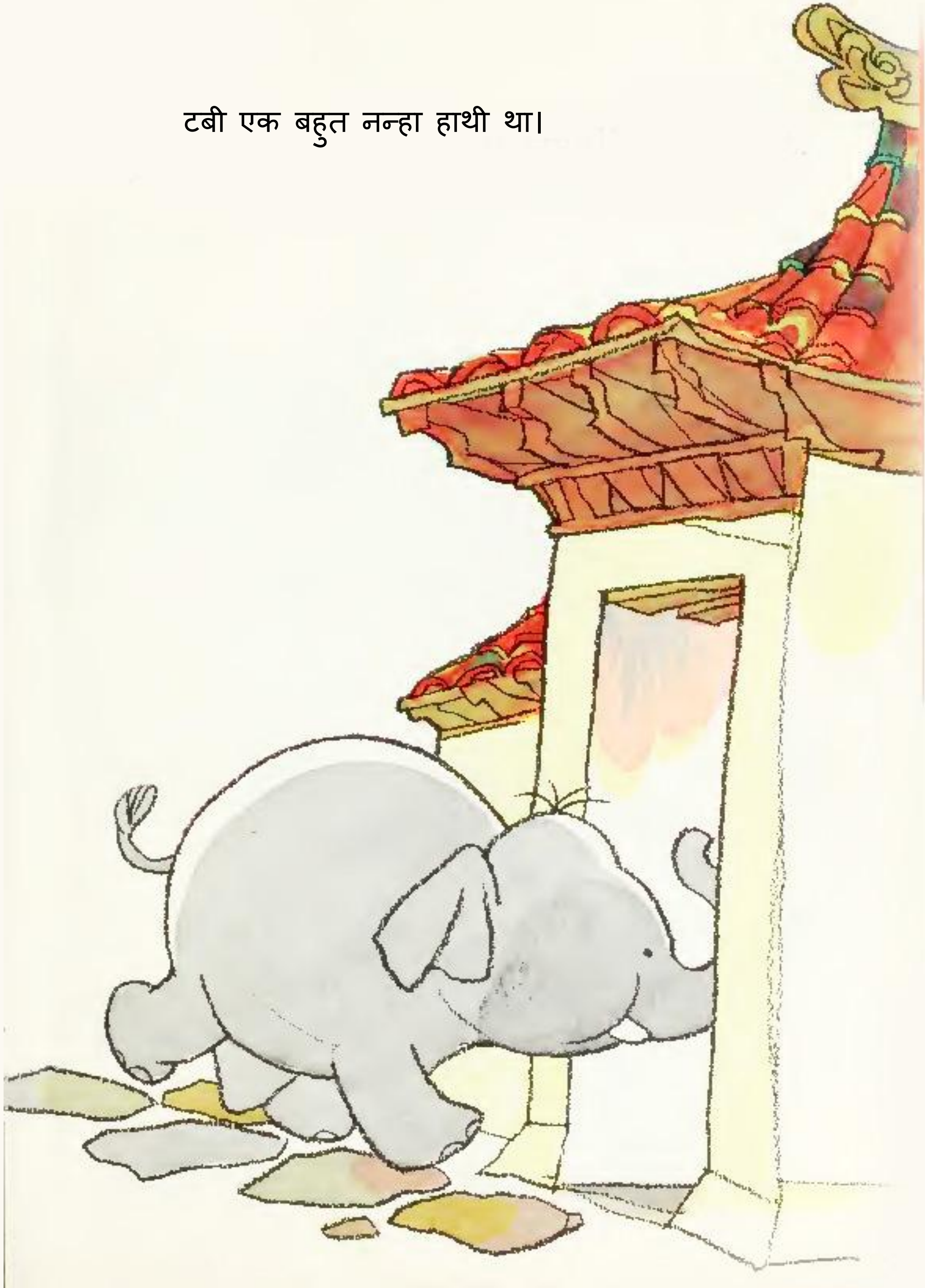

वह इतना छोटा था, कि एक
चारपाई के नीचे भी आ जाता।

लगभग।

लेकिन पूरी तरह नहीं।

लेकिन एक पालतू जानवर के नाते वह काफी बड़े डील-डौल वाला था।

वह आह-मी नाम के एक लड़के का पालतू हाथी था।

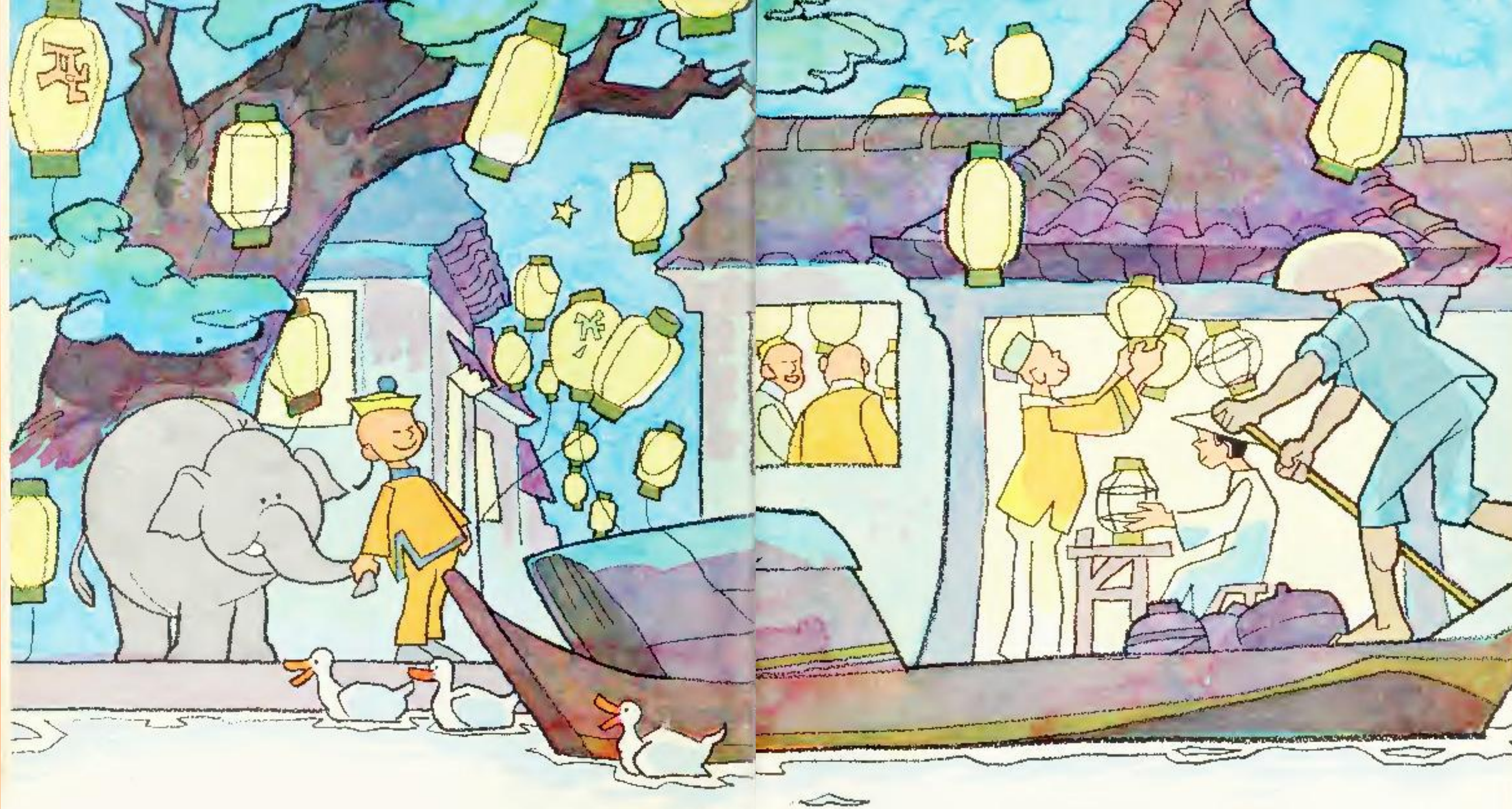

आह-मी और टबी रोलिंग रिवर नाम की नदी के किनार बसे एक शहर में रहते थे।

उनका घर सुनहरी लालटेनों वाली सड़क पर था।

उस सड़क पर रहने वाले सभी लोग कागज़ की लालटेनें बनाया करते थे।

बहुत प्यारी होती थीं उनकी बनायी वे लालटेनें।

वे हवा में उड़ा करती थीं।

आह-मी के माता-पिता सबसे अच्छी
लालटेनें बनाया करते थे।

आह-मी भी उनकी सहायता करता था।

और टबी आह-मी की सहायता करता।

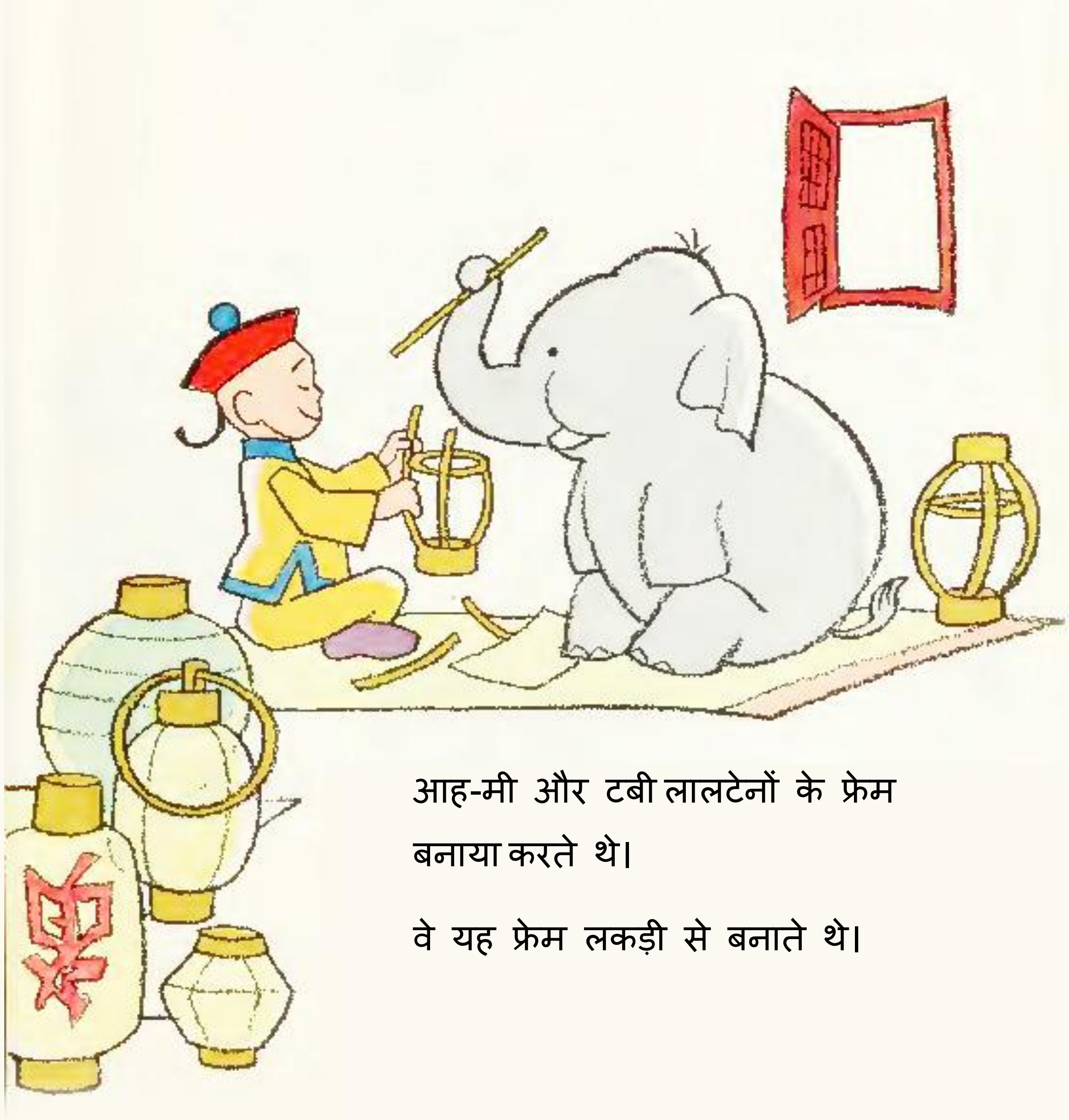

आह-मी और टबी लालटेनों के फ्रेम
बनाया करते थे।

वे यह फ्रेम लकड़ी से बनाते थे।

फ्रेम बना कर वे उस पर सुनहरा कागज़ चिपकाते थे।

वे मोमबत्तियां भी बनाते थे।

उन मोमबत्तियों को वे लालटेनों के अंदर रखते थे।

और फिर वे लालटेनों को सुन्दर रंगों से रंगते थे।

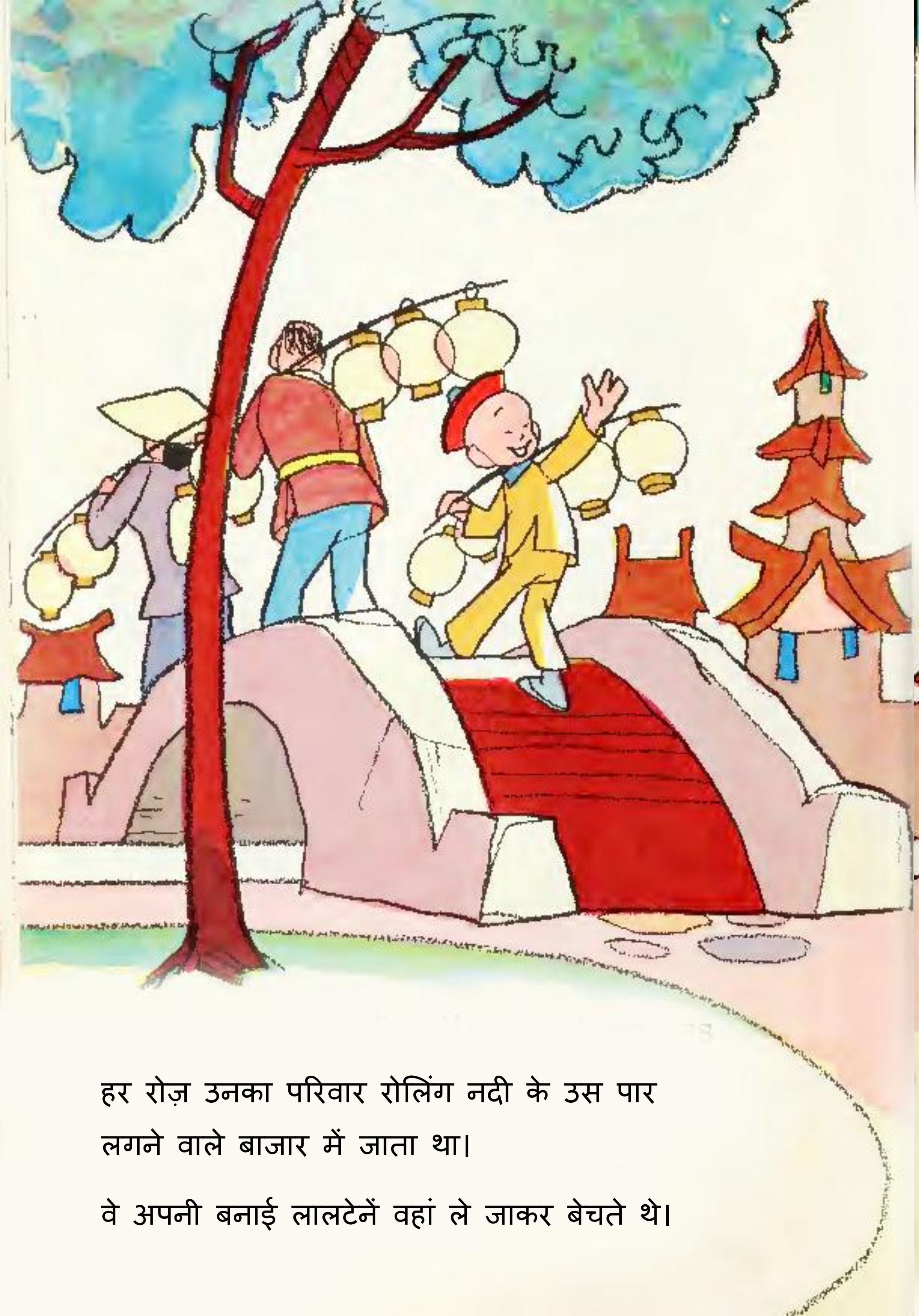

हर रोज़ उनका परिवार रोलिंग नदी के उस पार लगने वाले बाजार में जाता था।

वे अपनी बनाई लालटेनें वहां ले जाकर बेचते थे।

लेकिन आज एक खास दिन था।

"आज तो आह-मी का जन्मदिन है," टबी ने सोचा।

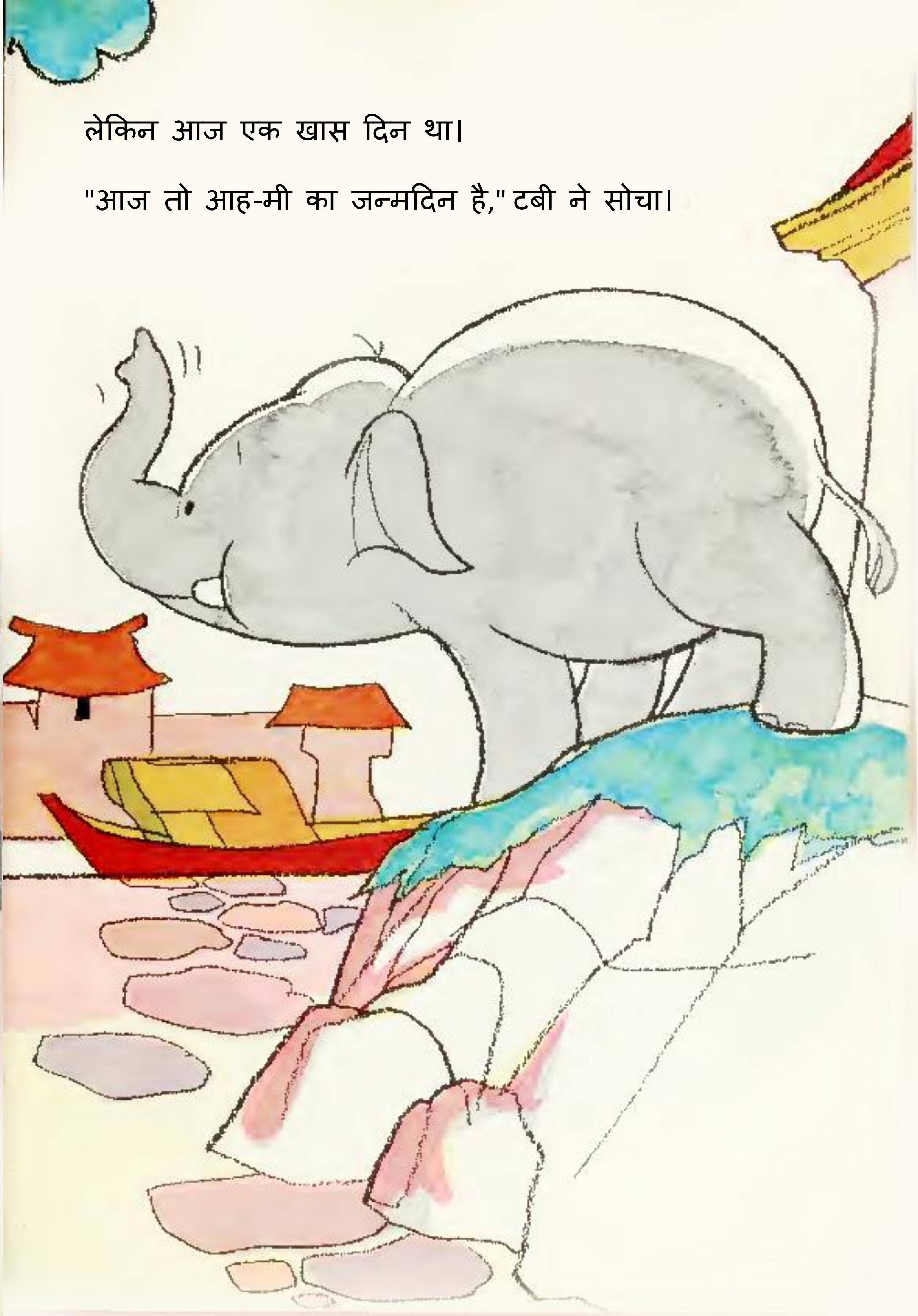

"मुझे उसके लिए एक खूबसूरत उपहार बनाना चाहिए।"

टबी ने दूकान की सारी मोमबत्तियां इकट्ठी कीं।

और उन्हें एक बहुत बड़ी कढ़ाही में डाल कर पिघला लिया।

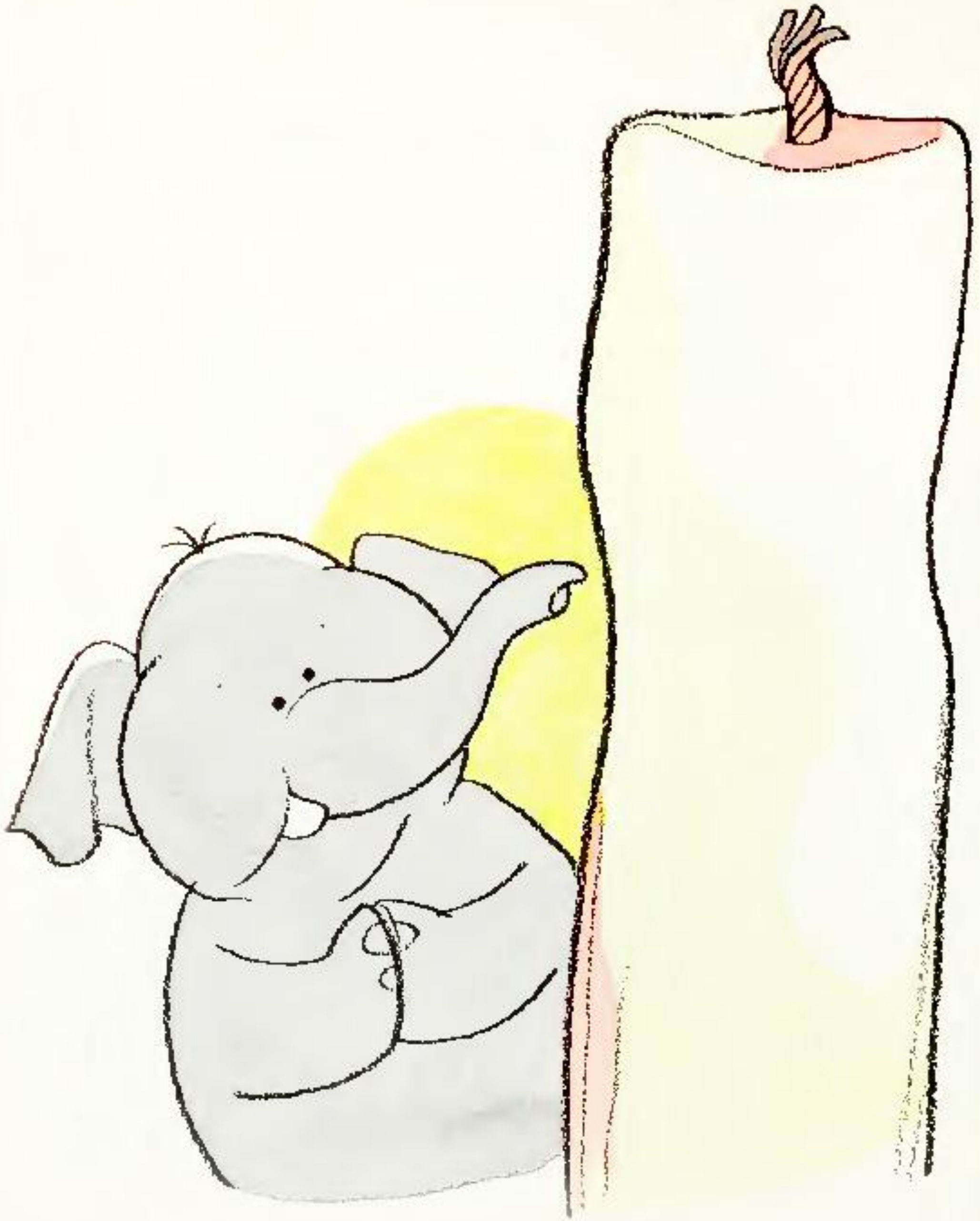

उन बहुत सारी मोमबत्तियों को पिघला कर टबी
ने एक अति-विशालकाय मोमबत्ती बना डाली।

फिर टबी ने दूकान में जितनी लकड़ी थी, सब जमा की।

और उसका एक बहुत ही बड़ा फ्रेम बना डाला।

फिर टबी ने दूकान में जितना भी सुनहरा कागज़ था, सारा का सारा इकठ्ठा किया।

और उस फ्रेम पर उसे चिपका दिया।

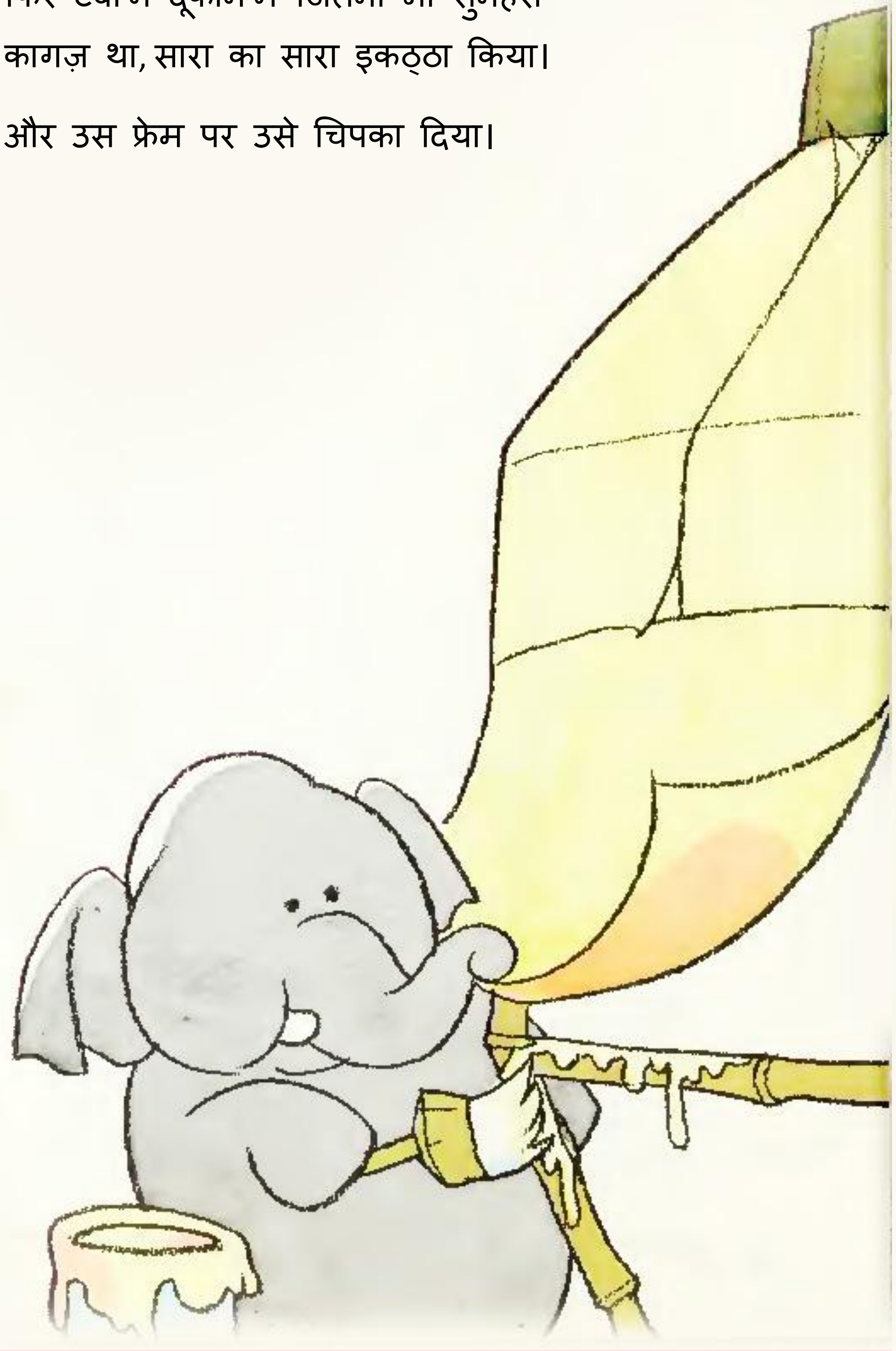

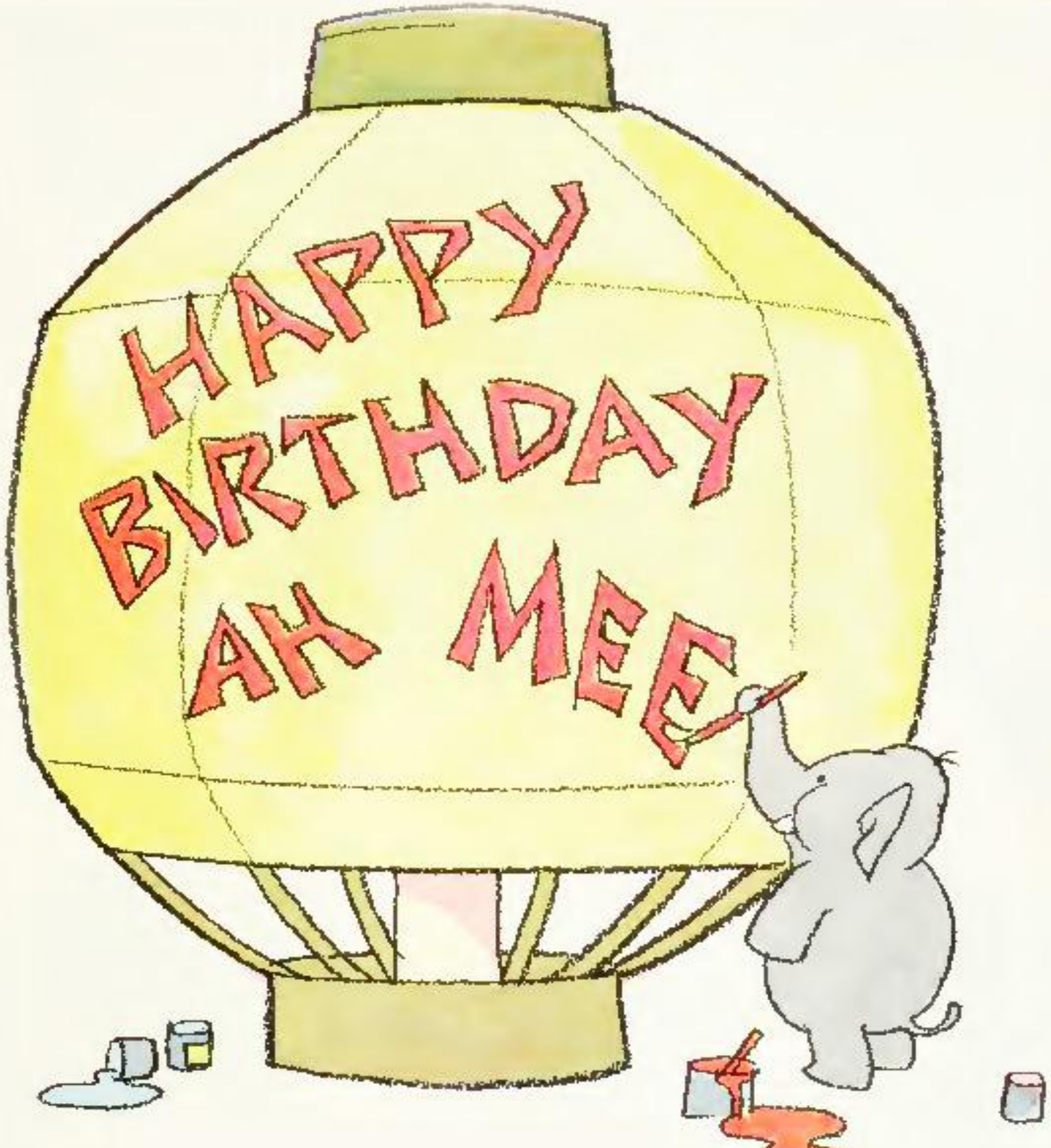

फिर उसने दूकान का सारा रंग लेकर उस लालटेन पर बहुत बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा,

"जन्मदिन मुबारक हो, आह-मी"

"वाह, क्या लालटेन बन कर तैयार हुई है!" टबी ने सोचा।

"यह दुनिया की सबसे विशालकाय और सबसे ख़ूबसूरत लालटेन है।"

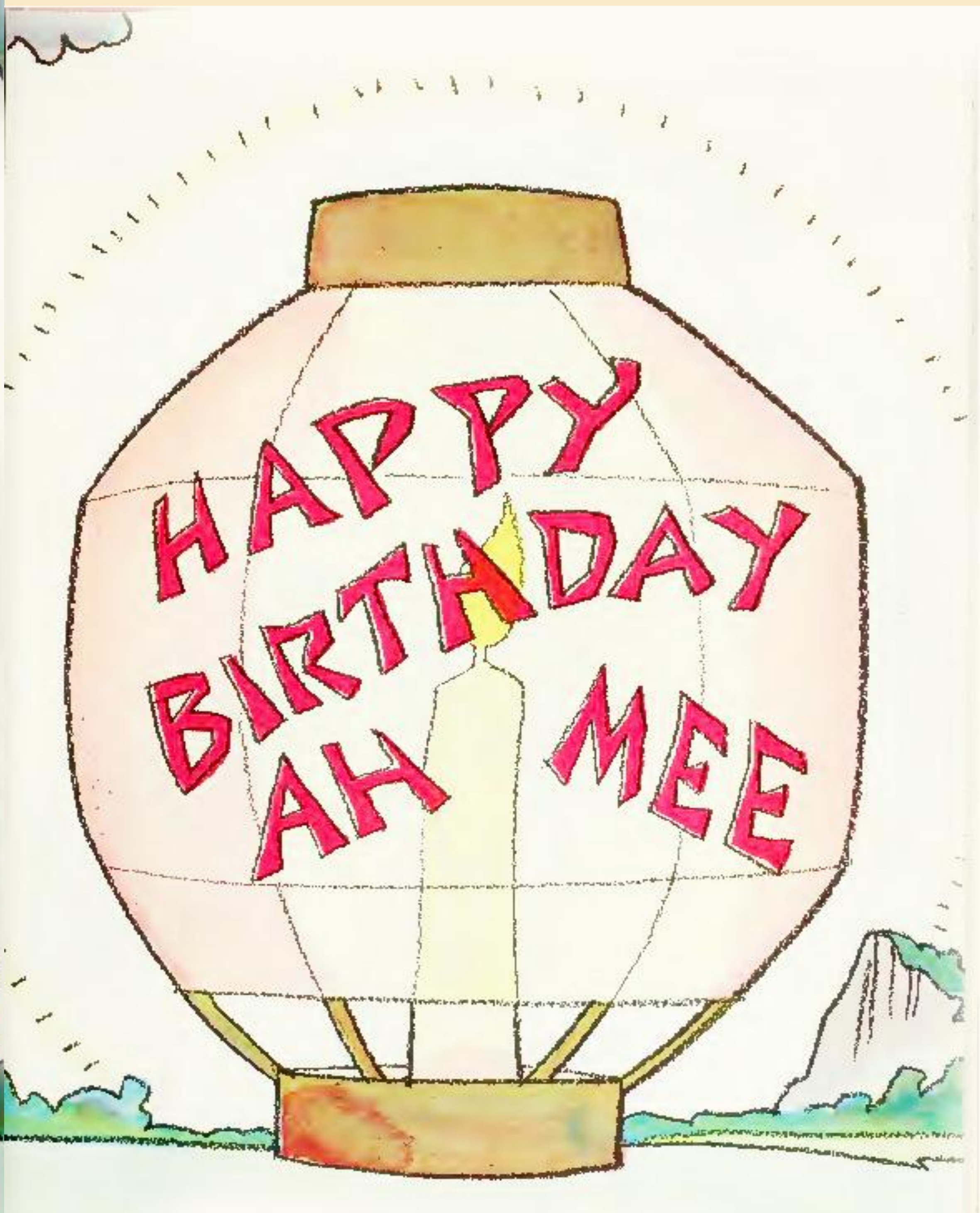

फिर टबी ने लालटेन की मोमबत्ती को जलाया।

उस विशाल लालटेन में गर्म हवा भरने लगी।

और फिर वह हवा में तैरने लगी, और ऊपर को उठने लगी।

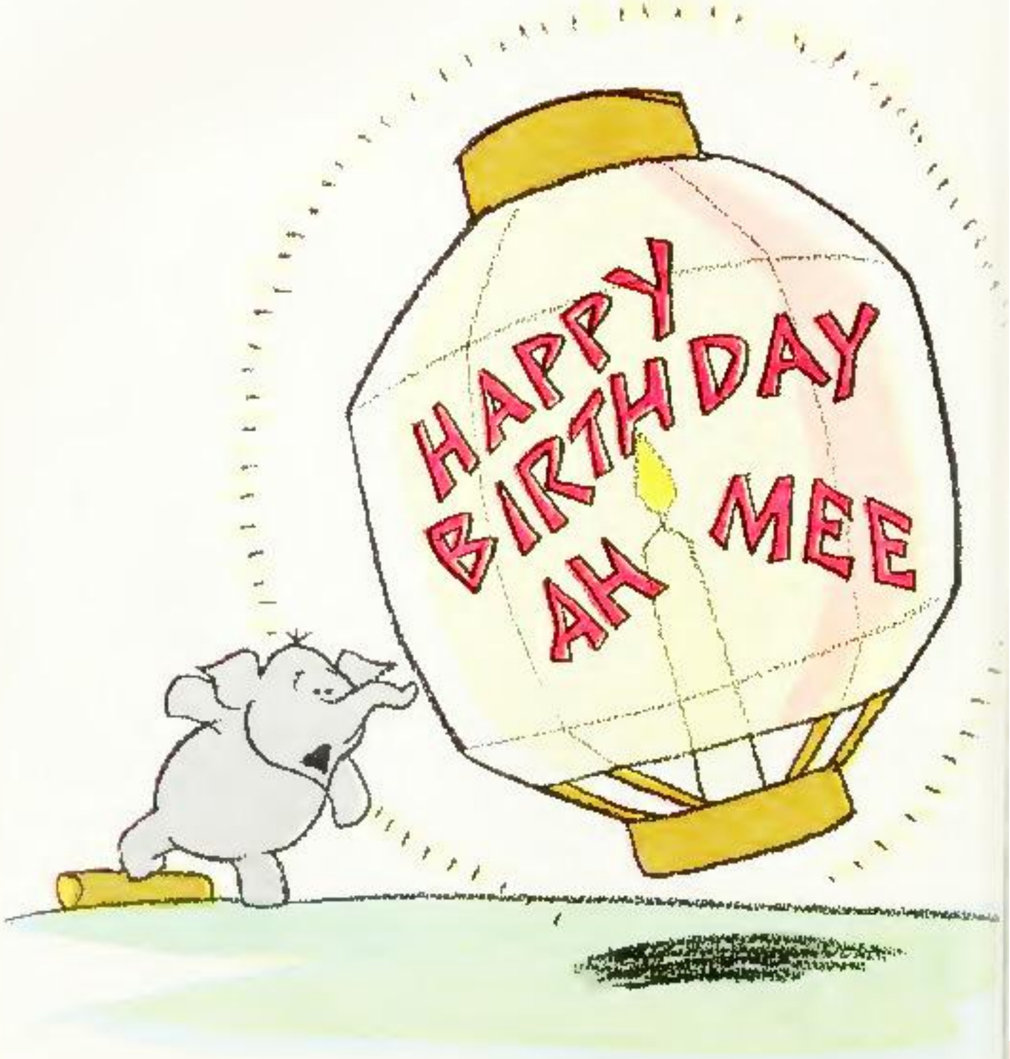

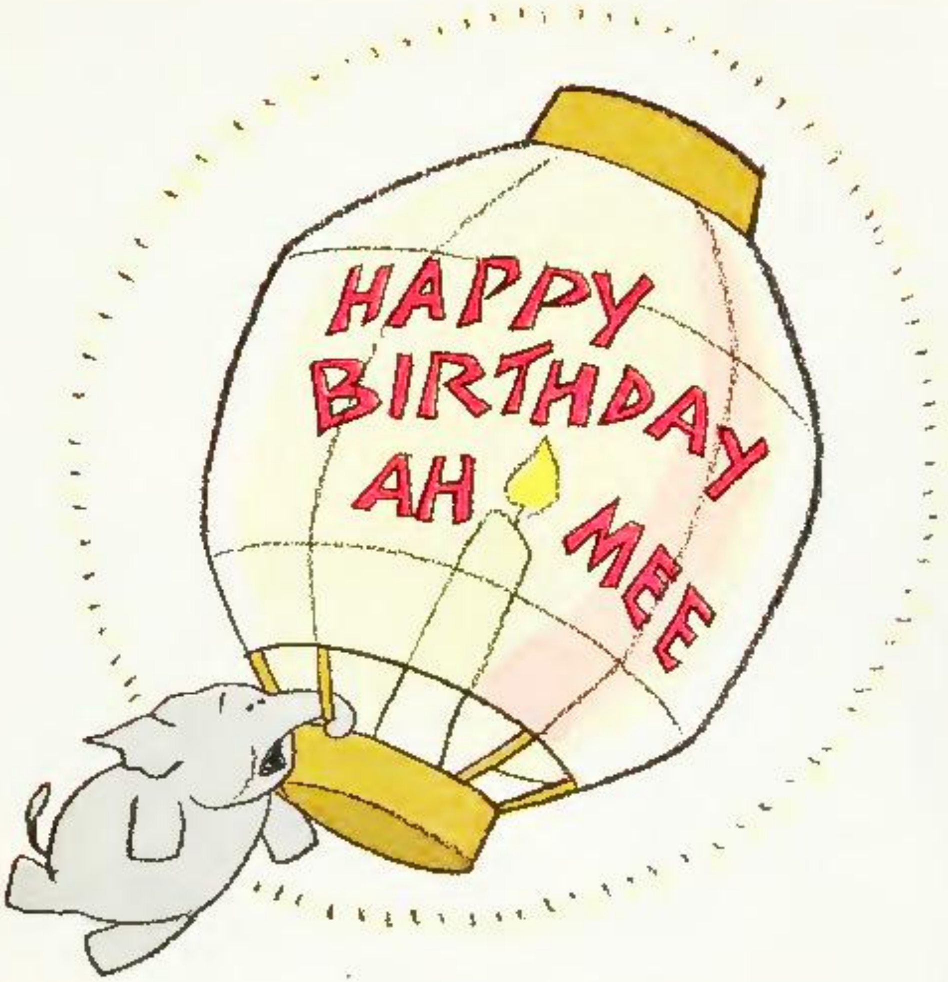

टबी ने उसे कस कर पकड़ लिया।

लेकिन लालटेन ऊपर उठती ही गई,

और उसके साथ टबी भी ऊपर जाने लगा।

नदी के ऊपर, बहुत ऊपर,

उठते गए, टबी और लालटेन।

वे आसमान में तैरते रहे,

नगर के ऊपर,

बाज़ारों के ऊपर,

और आह-मी के ठीक ऊपर भी।

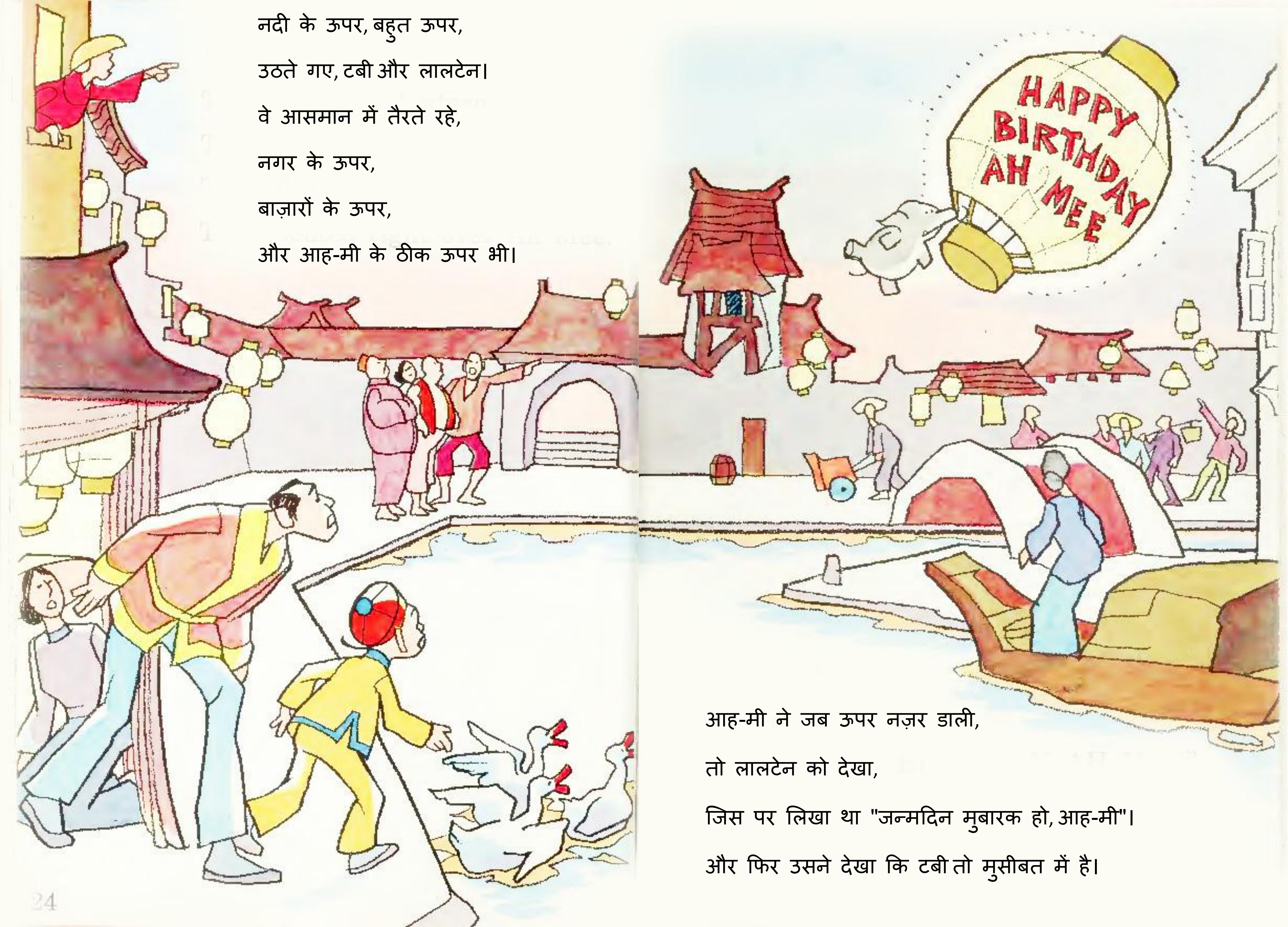

आह-मी ने जब ऊपर नज़र डाली,

तो लालटेन को देखा,

जिस पर लिखा था "जन्मदिन मुबारक हो, आह-मी"।

और फिर उसने देखा कि टबी तो मुसीबत में है।

"घबराओ मत टबी," आह-मी ने पुकारा।

" मैं तुम्हें बचाऊंगा!"

फिर झट से उसने बहुत सी छोटी लालटेनें उठाईं।

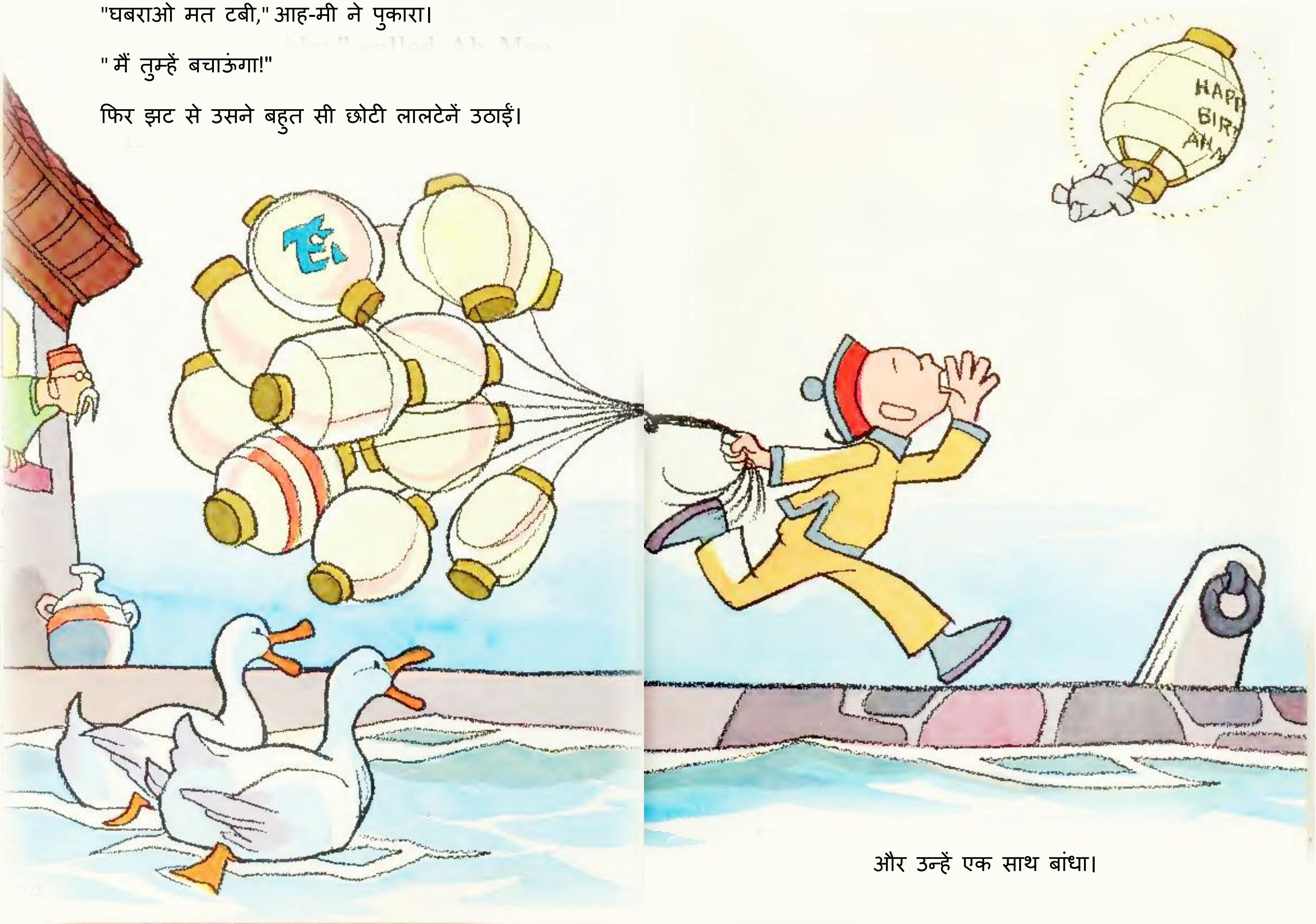

और उन्हें एक साथ बांधा।

फिर क्या था, छोटी लालटेनें ऊपर उठने लगीं।

और उनके साथ ही आह-मी भी उड़ने लगा।

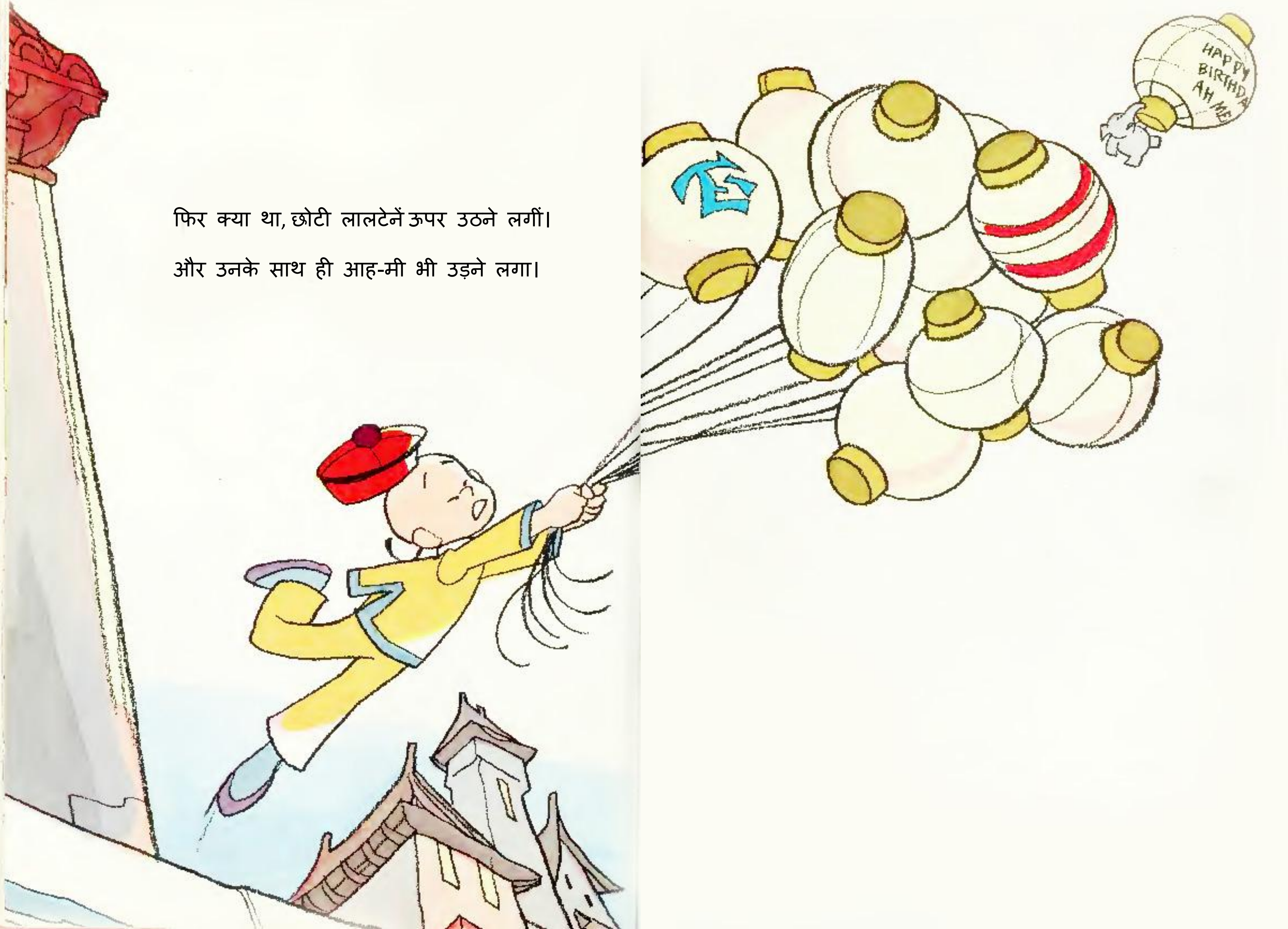

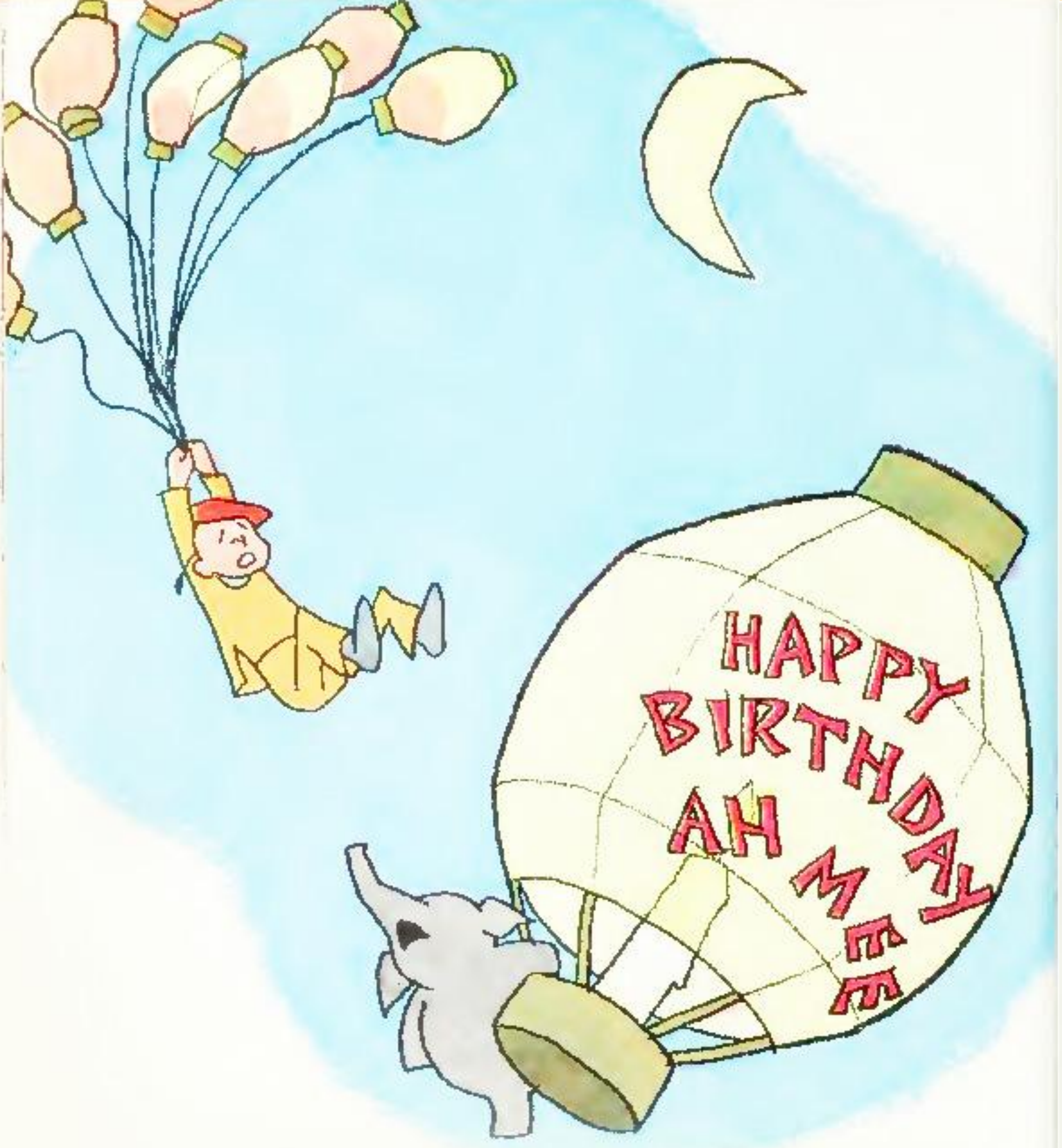

आह-मी ऊपर उठता ही गया।

लेकिन फिर एक मुसीबत आन पड़ी।

उसकी लालटेनों की मोमबत्तियां बुझने लगीं।

और लालटेनें नीचे गिरने लगीं।

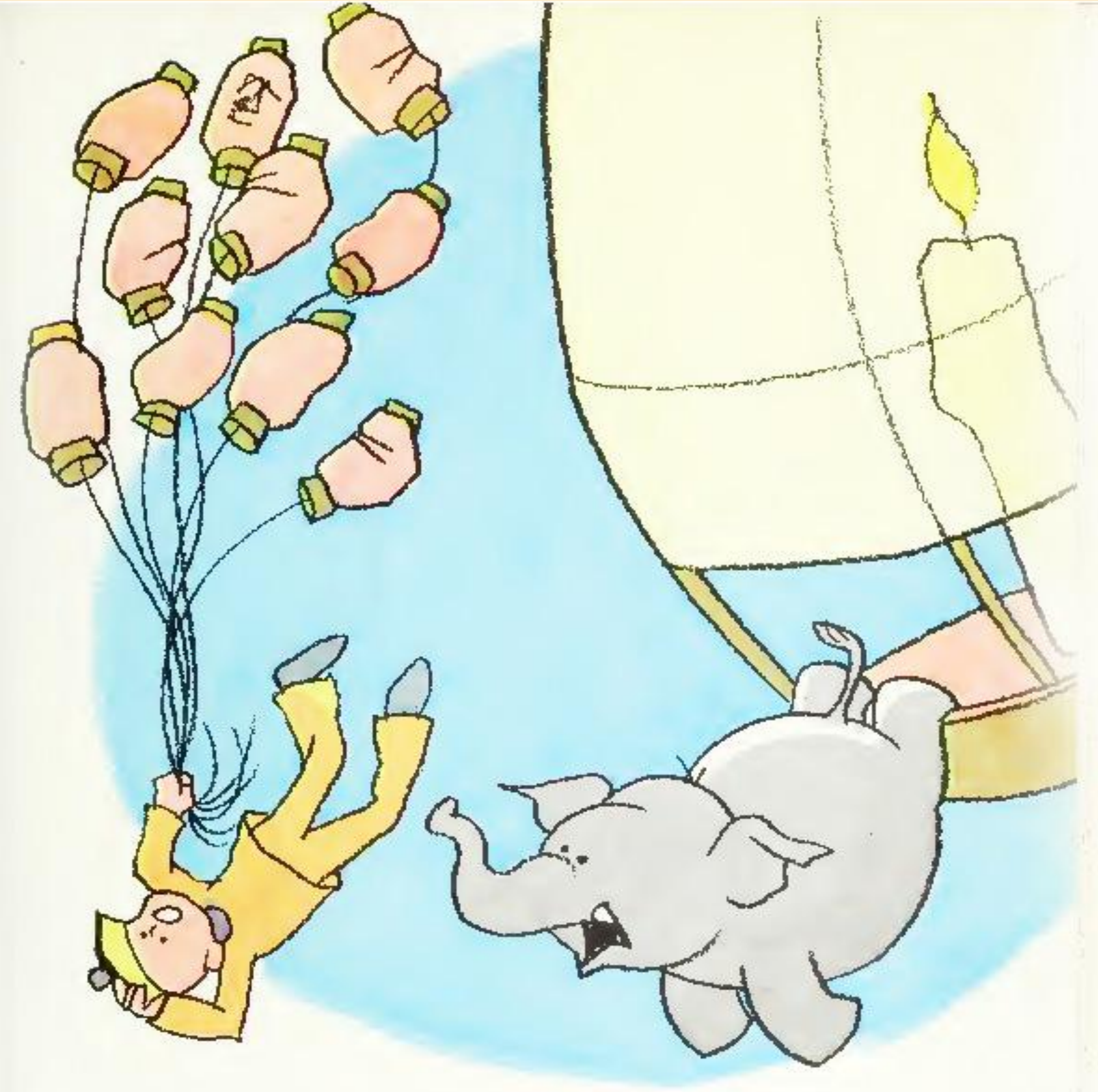

आह-मी को बचाने के लिए टबी ने उसके नज़दीक पहुँचने की कोशिश की।

और जैसे ही नीचे गिरता आह-मी उसके नज़दीक से गुज़रा ...

टबी ने उसे अपनी सूंड़ से पकड़ लिया।

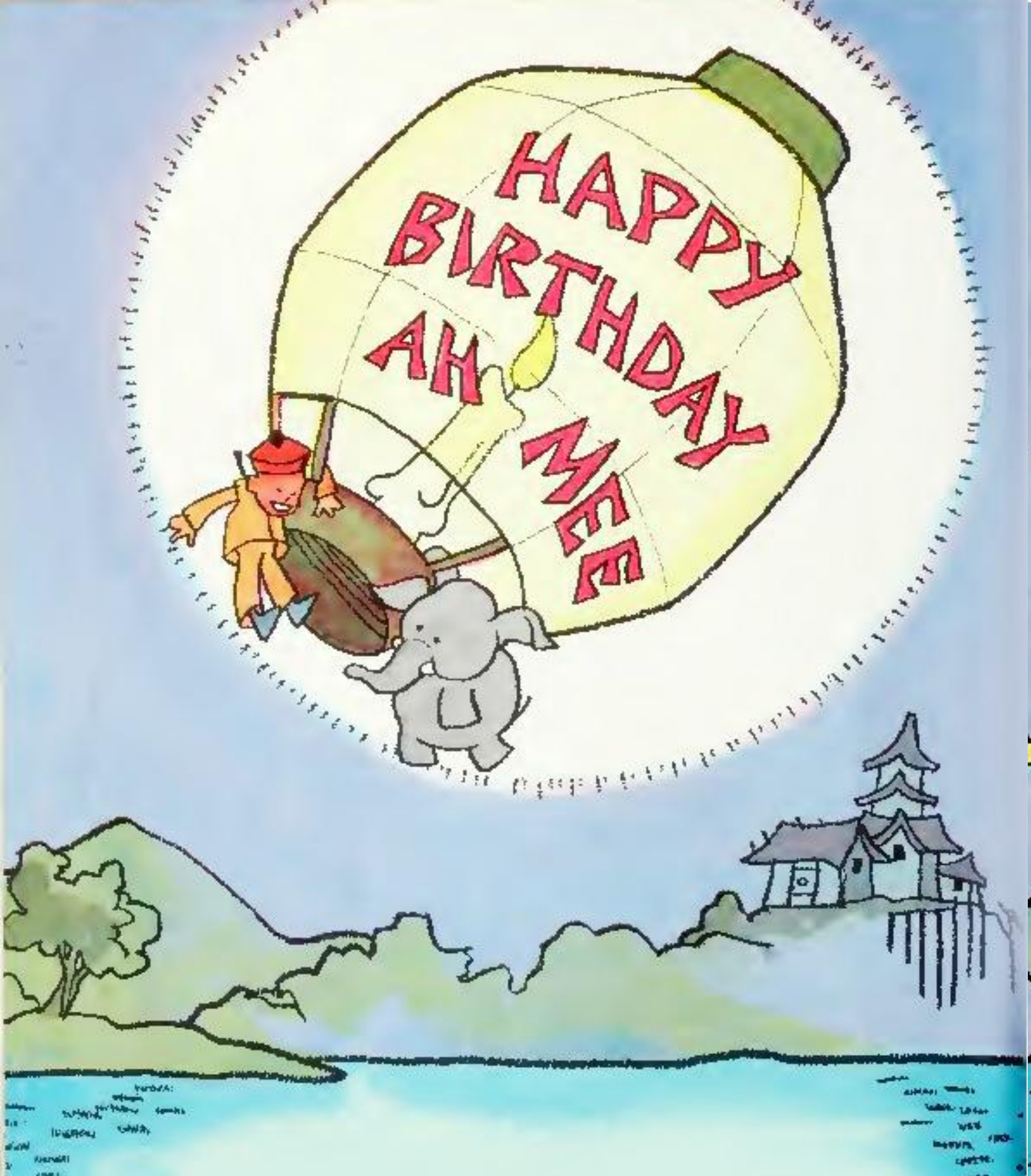

वह जन्मदिन वाली लालटेन सारी
रात आसमान में तैरती रही।

पहाड़ों के ऊपर,

समंदर के ऊपर।

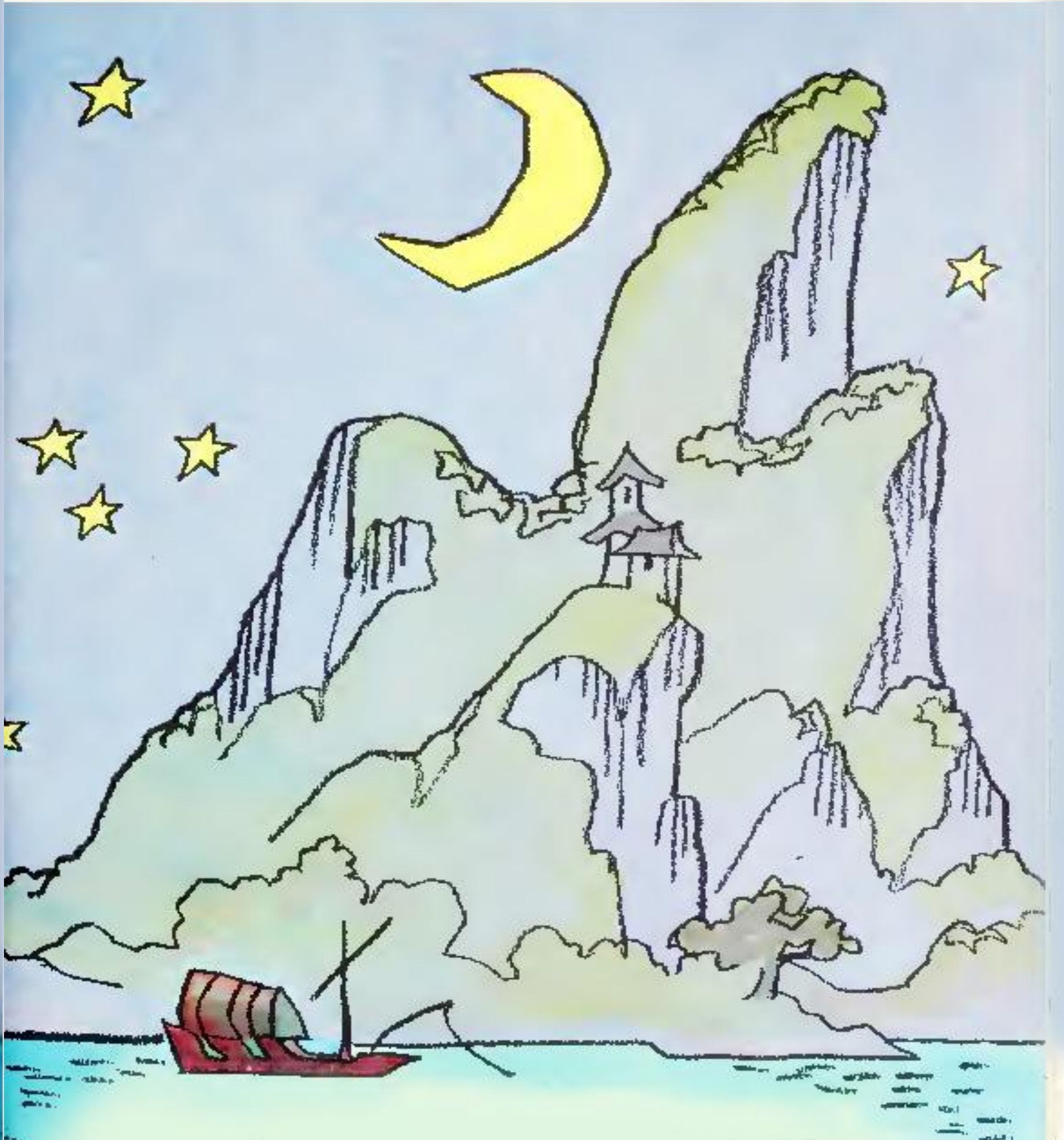

"शुक्रिया, टबी," आह-मी ने कहा।

यह मेरा अब तक का सबसे पसंदीदा
जन्मदिन का उपहार है।

लेकिन अब हम भला नीचे कैसे उतरें ?

और फिर अचानक सूरज उग आया।

और एक नई परेशानी पैदा हो गई।

बड़ी मोमबत्ती भी बुझने लगी।

जन्मदिन वाली लालटेन नीचे गिरने लगी।

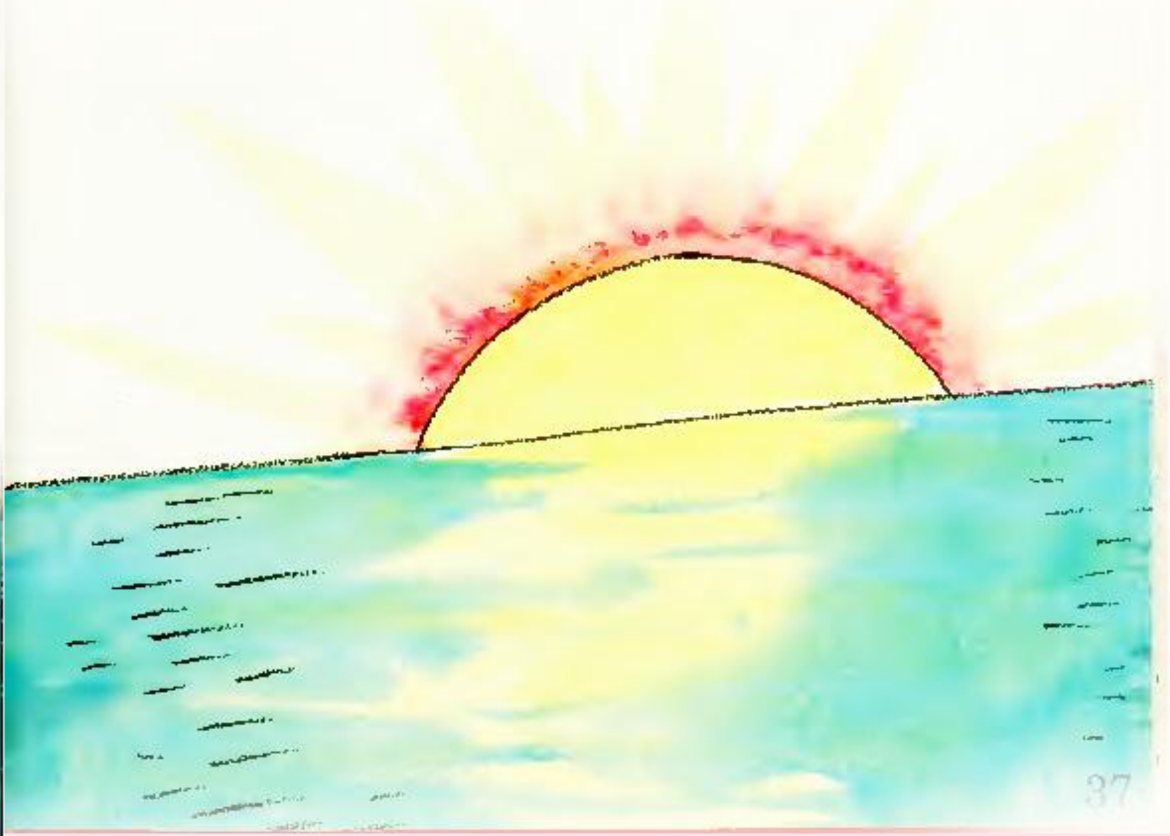

टबी और आह-मी ने नीचे की ओर देखा।

उन्हें दो नावें दिखाई दीं।

उनकी लालटेन उन दोनों नावों के बीच
समुद्र की ओर गिरती ही जा रही थी।

तभी एक नाविक ने उनकी ओर एक रस्सी फेंकी,
और ज़ोर से चिल्लाया, "पकड़ लो इसको"।

टबी ने झट से वह रस्सी पकड़ ली।

और फिर उस नाविक ने रस्सी खेंच कर
उन दोनों को नाव पर उतार लिया।

"अभी तुम सुरक्षित नहीं हो," एक नाविक ने कहा।

दुसरी नाव की तरफ इशारा करके उसने कहा, "वे समुद्री डाकू हमारे पीछे लगे हैं। अगर उनहोंने हमें पकड़ लिया तो वे हम सब को समुद्र में फ़ेंक देंगे।"

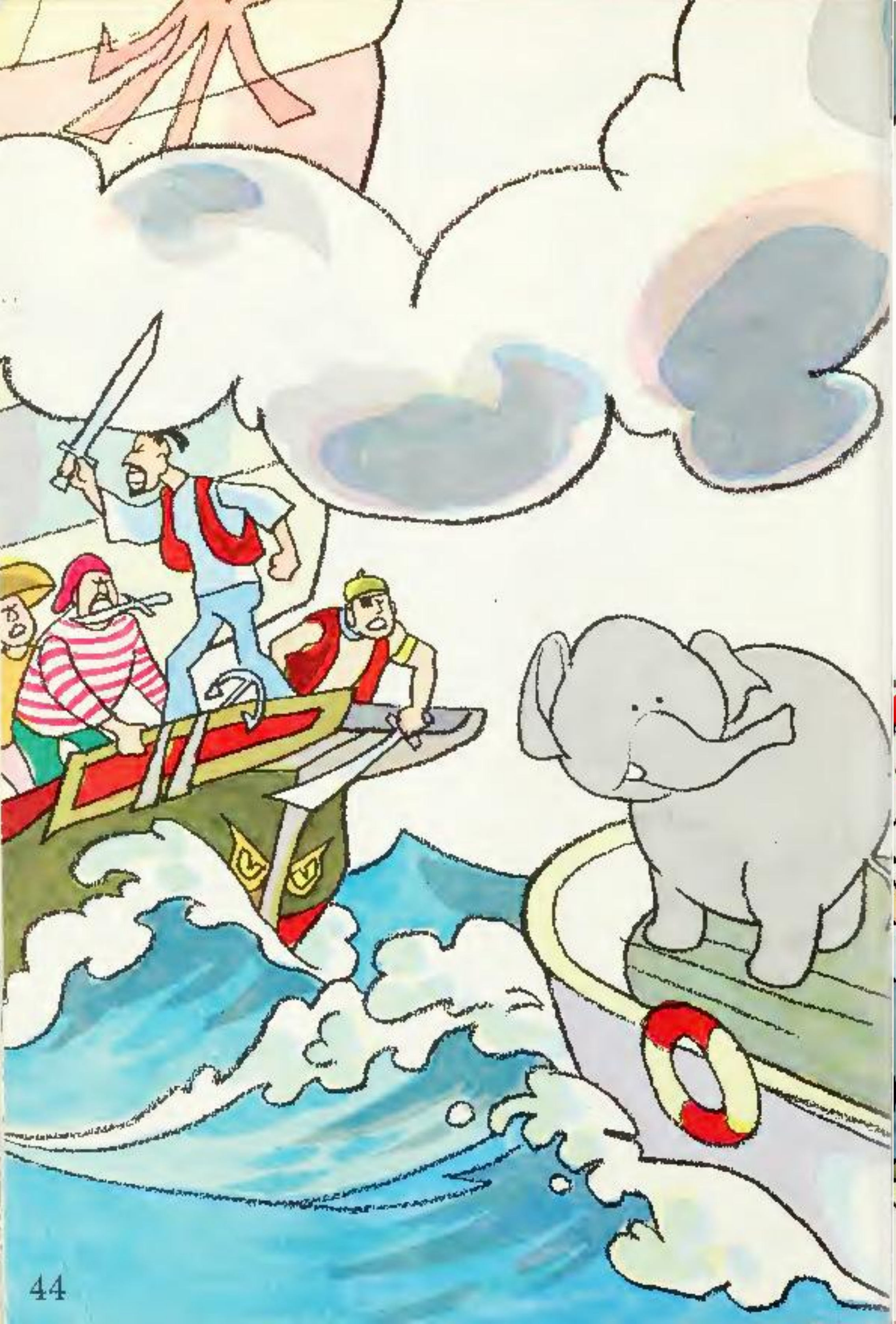

"मैं समझ गया मुझे क्या करना है," आह-मी ने कहा।

"मेरे जन्म-दिन वाली इस लालटेन को हटाने में ज़रा मेरी मदद करें।"

"ज़रा जल्दी से! इस लालटेन को नाव
की चिमनी के के ऊपर चढ़ा दें।"

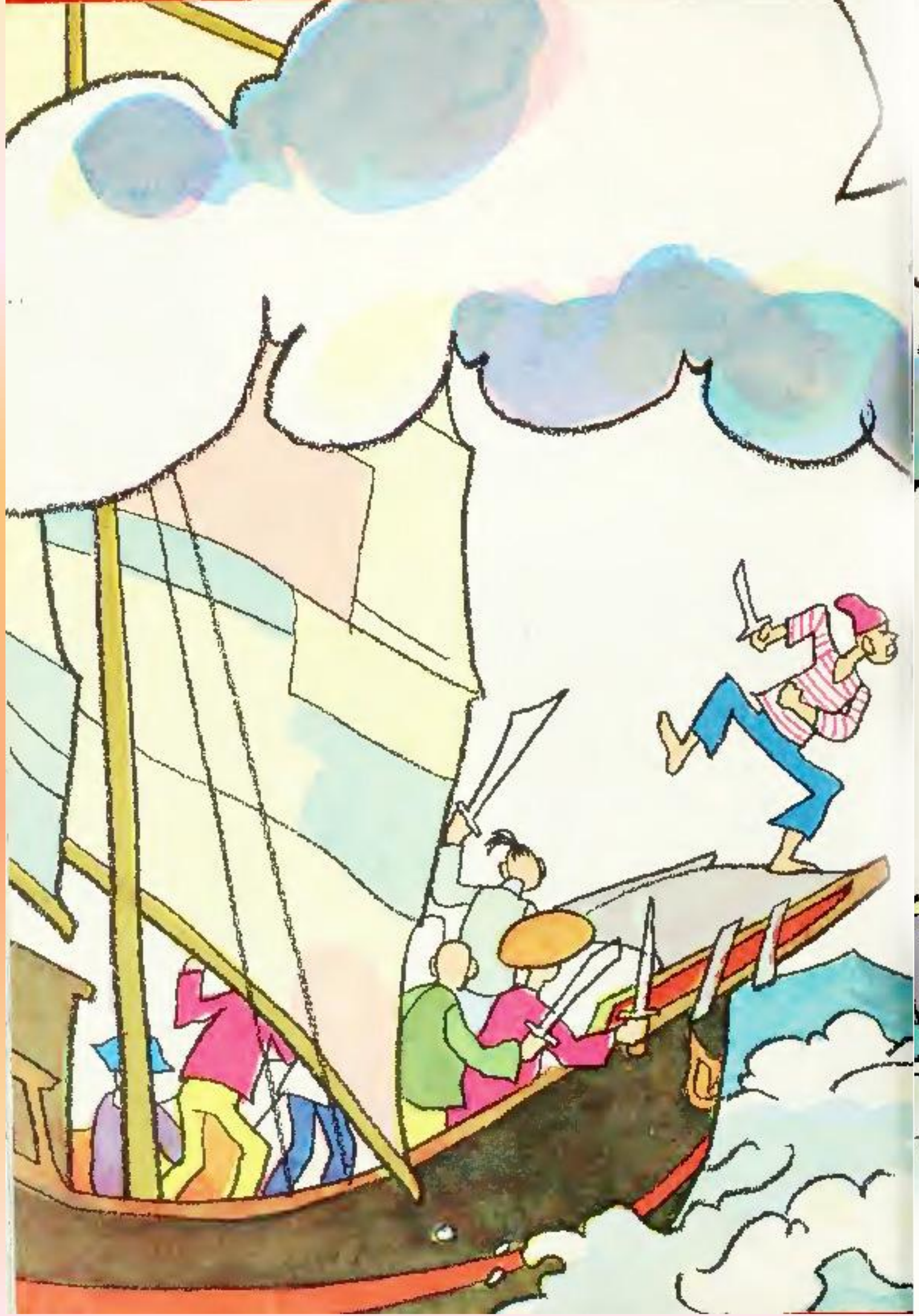

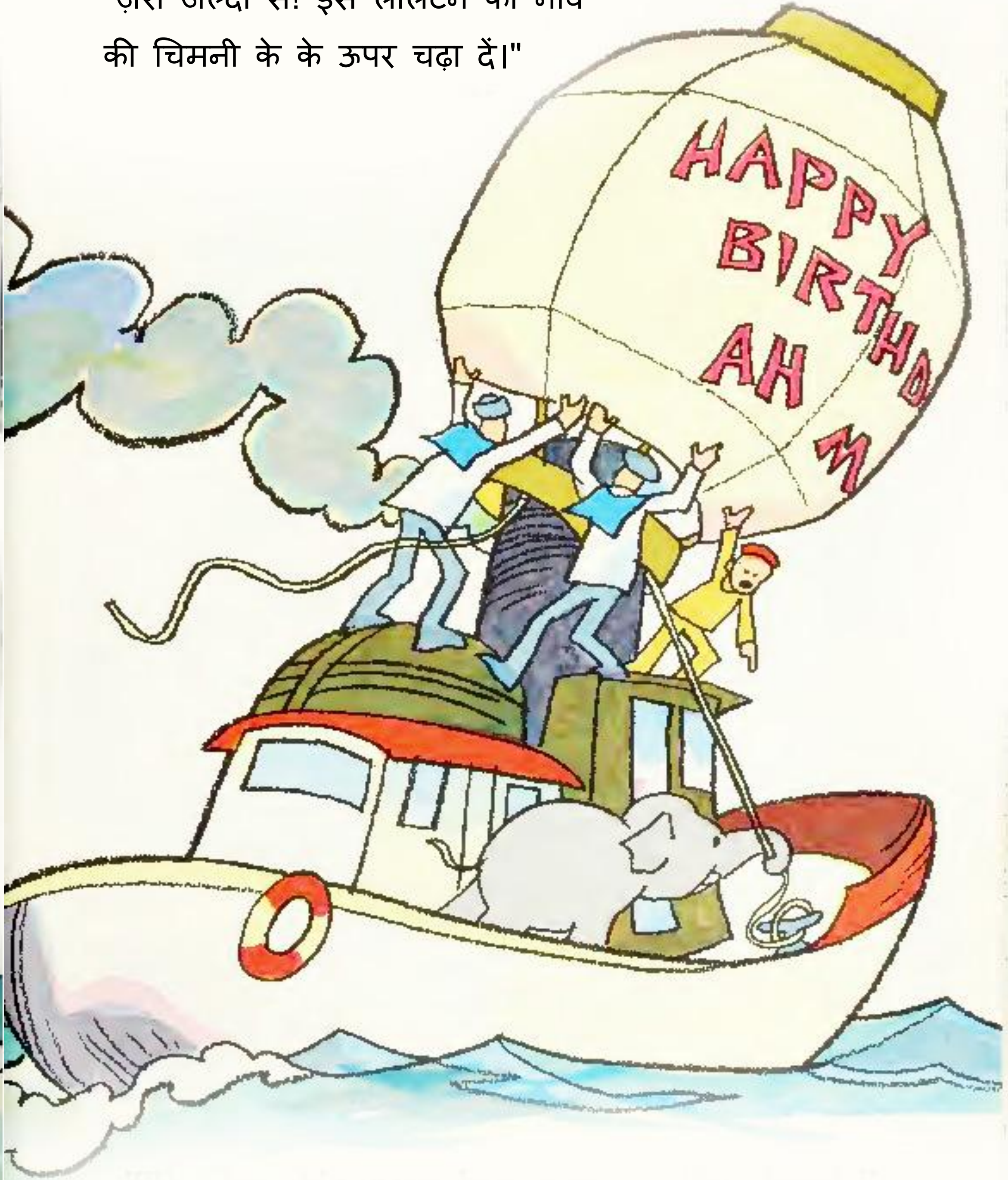

"और टबी, तुम लालटेन को नाव के साथ कस कर बाँध दो।

लालटेन में चिमनी का गर्म धुआं भरने लगा।

और लालटेन फिर से हवा में तैरने लगी।

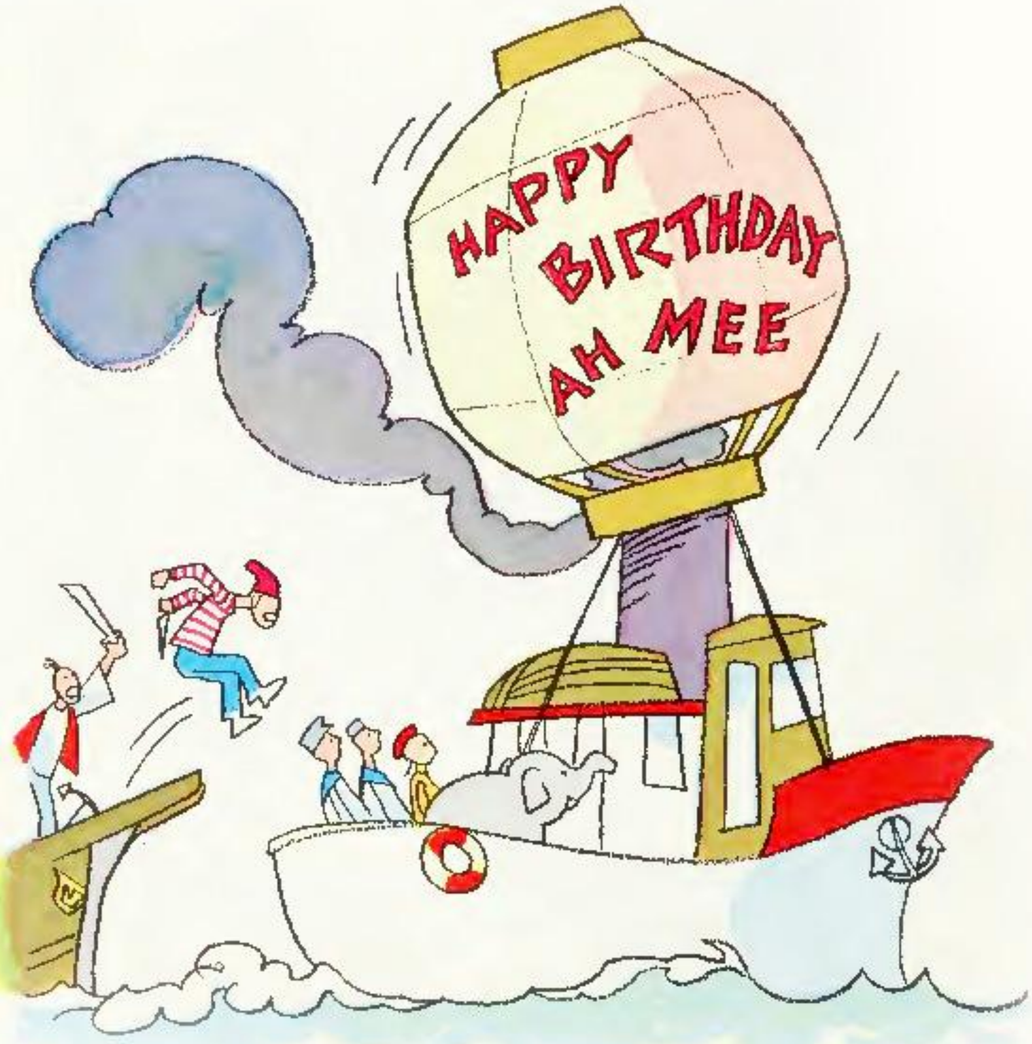

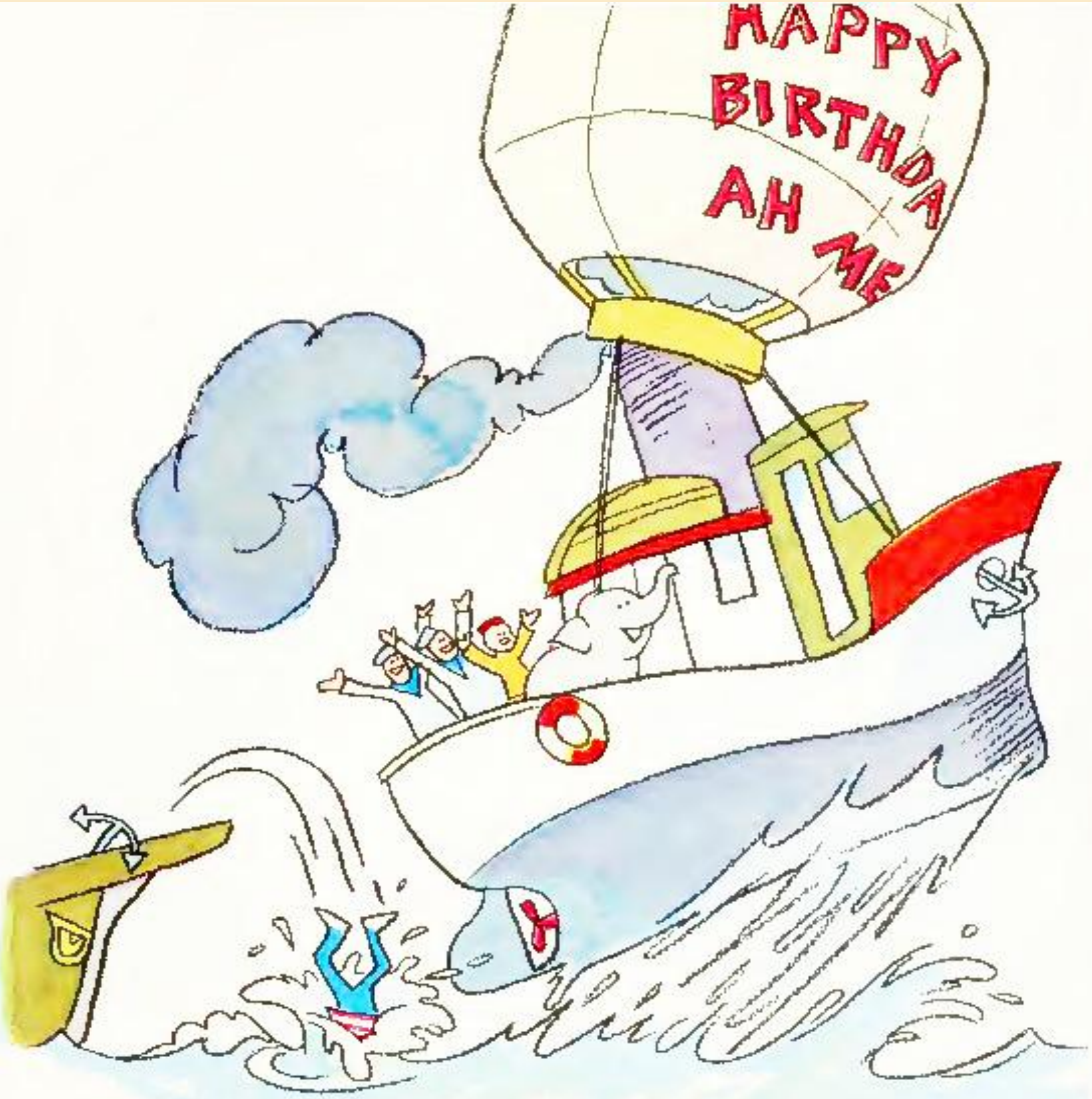

लालटेन ऊपर उठने लगी।

और उसके साथ-साथ नाव भी ऊपर उठने लगी।

जल्दी ही नाव आसमान में बहुत ऊपर तैर रही थी।

और डाकू बहुत नीचे रह गए थे।

हवा में तैरते-तैरते लालटेन समुद्र के ऊपर

से गुज़र कर पहाड़ियों के ऊपर जा पहुंची।

आह-मी और टबी ने नीचे की ओर देखा।

"हम घर पहुँचने ही वाले हैं," आह-मी ने कहा।

"मुझे रोलिंग-नदी दिखाई दे रही है।"

"चिमनी का धुआं बंद कर दो," आह-मी ने कहा।

चिमनी से गर्म धुआं निकलना बंद हो गया।

और धीरे-धीरे वे सभी नीचे उतर आये।

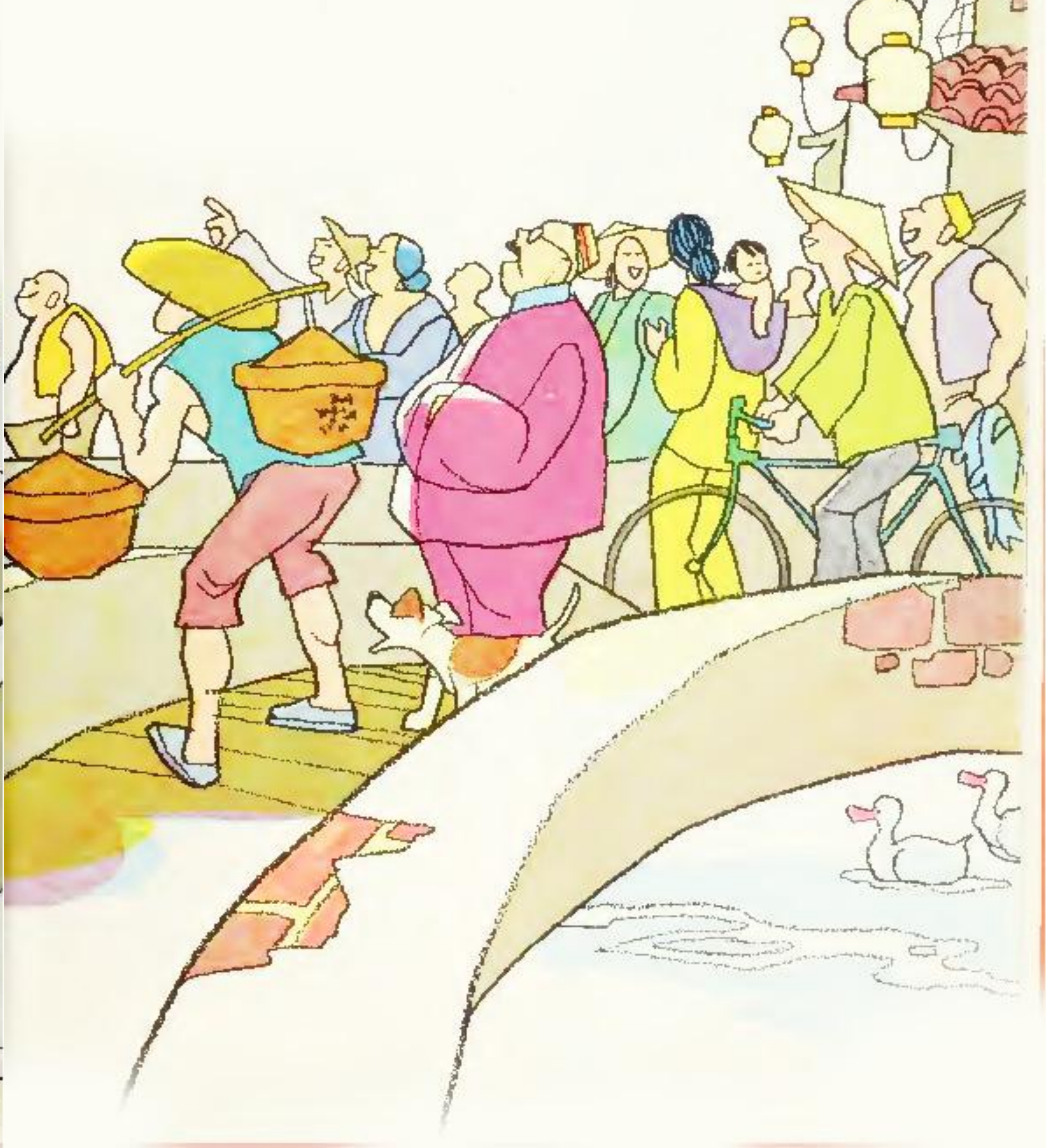

अब वह नाव रोलिंग-नदी पर तैर रही थी, एकदम आह-मी के घर के नज़दीक।

फिर आह-मी और टबी ने लालटेन को नाव से नीचे उतारा।

उस रात सभी लोग आह-मी के जन्म-दिन की दावत में शामिल हुए।

हालांकि यह दावत दो दिन की देरी से हो रही थी, लेकिन फिर भी सबने ज़ोर-शोर से इसमें हिस्सा लिया।

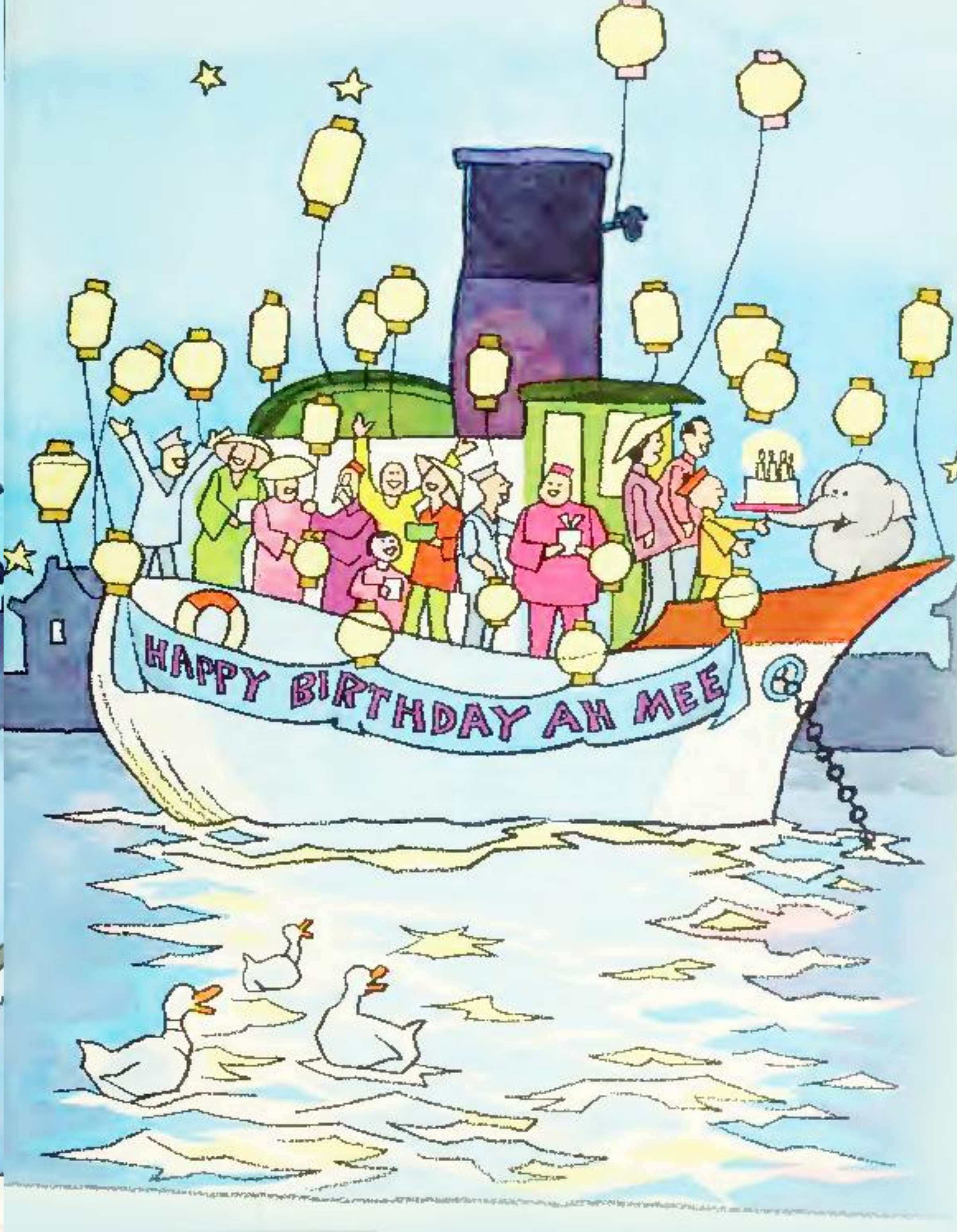

और अगले दिन टबी का जन्म-दिन था।

आह-मी ने पहले ही सोच रखा था कि
उसे क्या उपहार देना है।

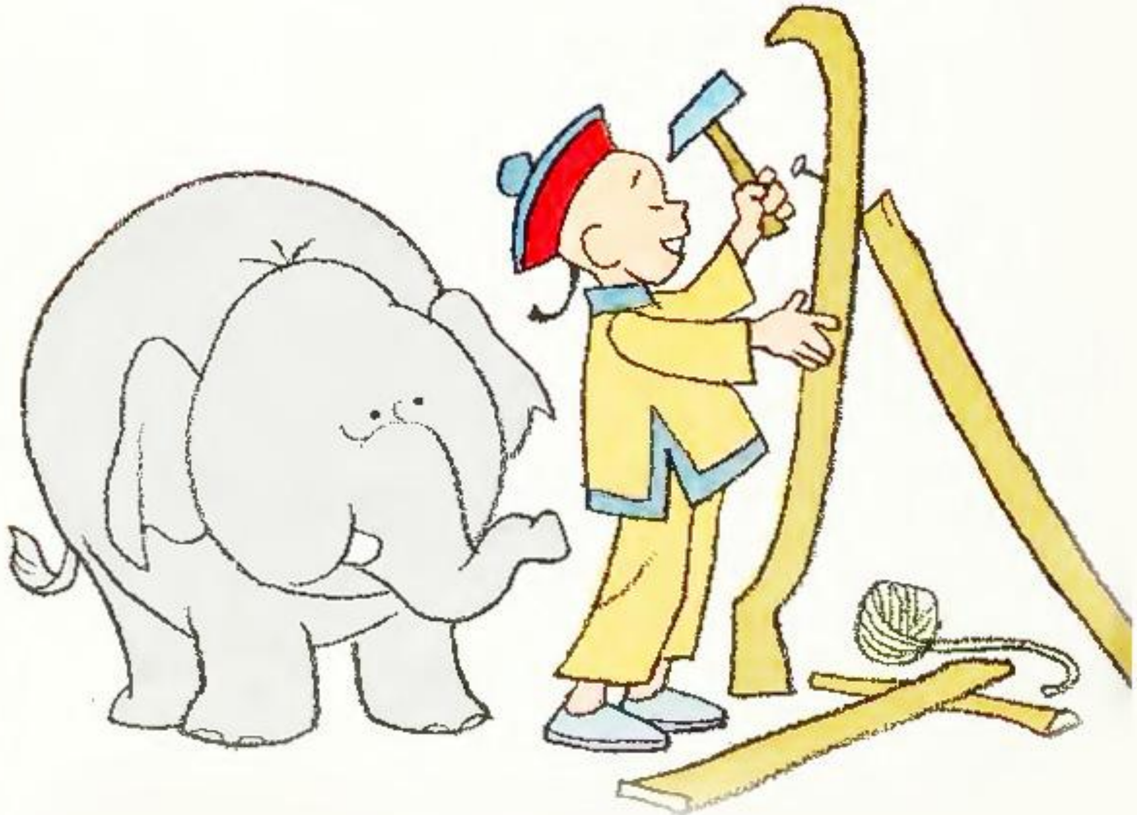

आह-मी कुछ कीलें और एक हथौड़ा ले कर आया।

और कुछ लकड़ी भी।

और उसने एक पलंग बनाया।

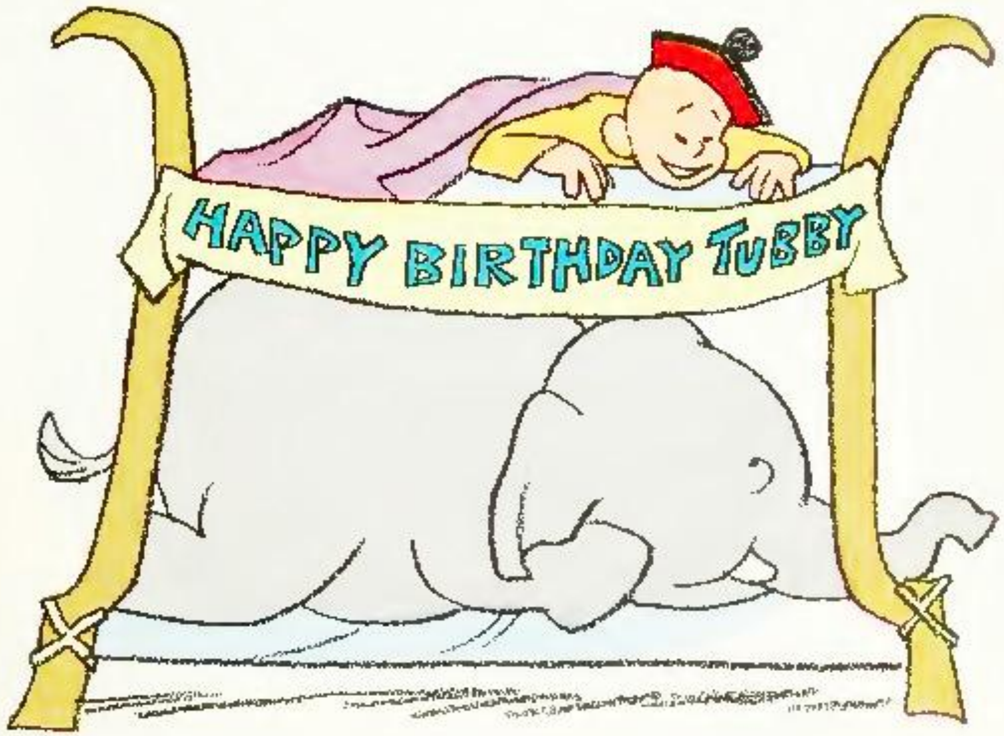

वह पलंग ऐसा था कि आह-मी उस पर
ऊपर सो सके, और टबी उसके नीचे।

और रोज़ रात को आह-मी और टबी इसी पलंग पर सोते हैं।

और दोनों रात को एक जैसे सपने देखते हैं।

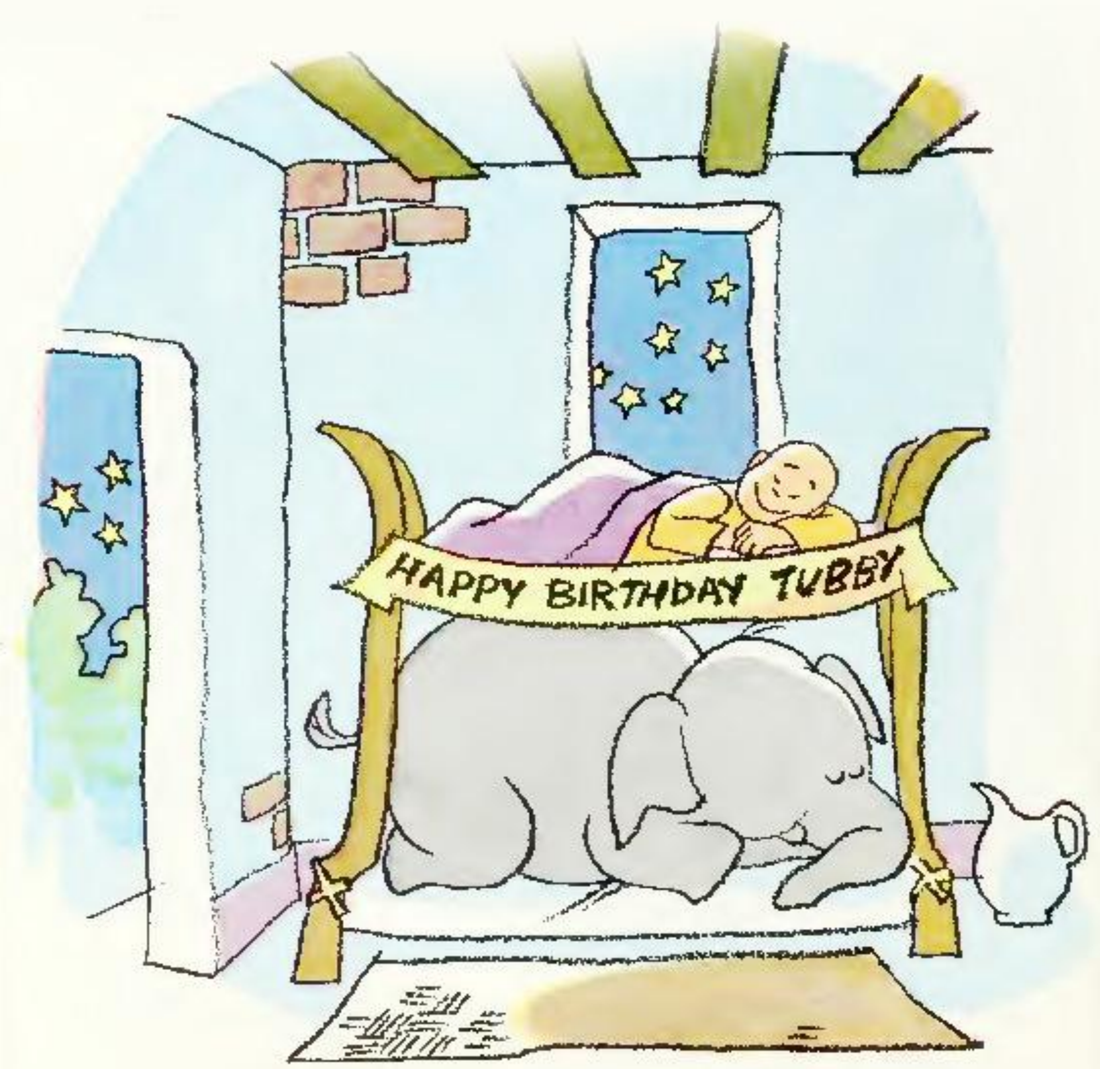

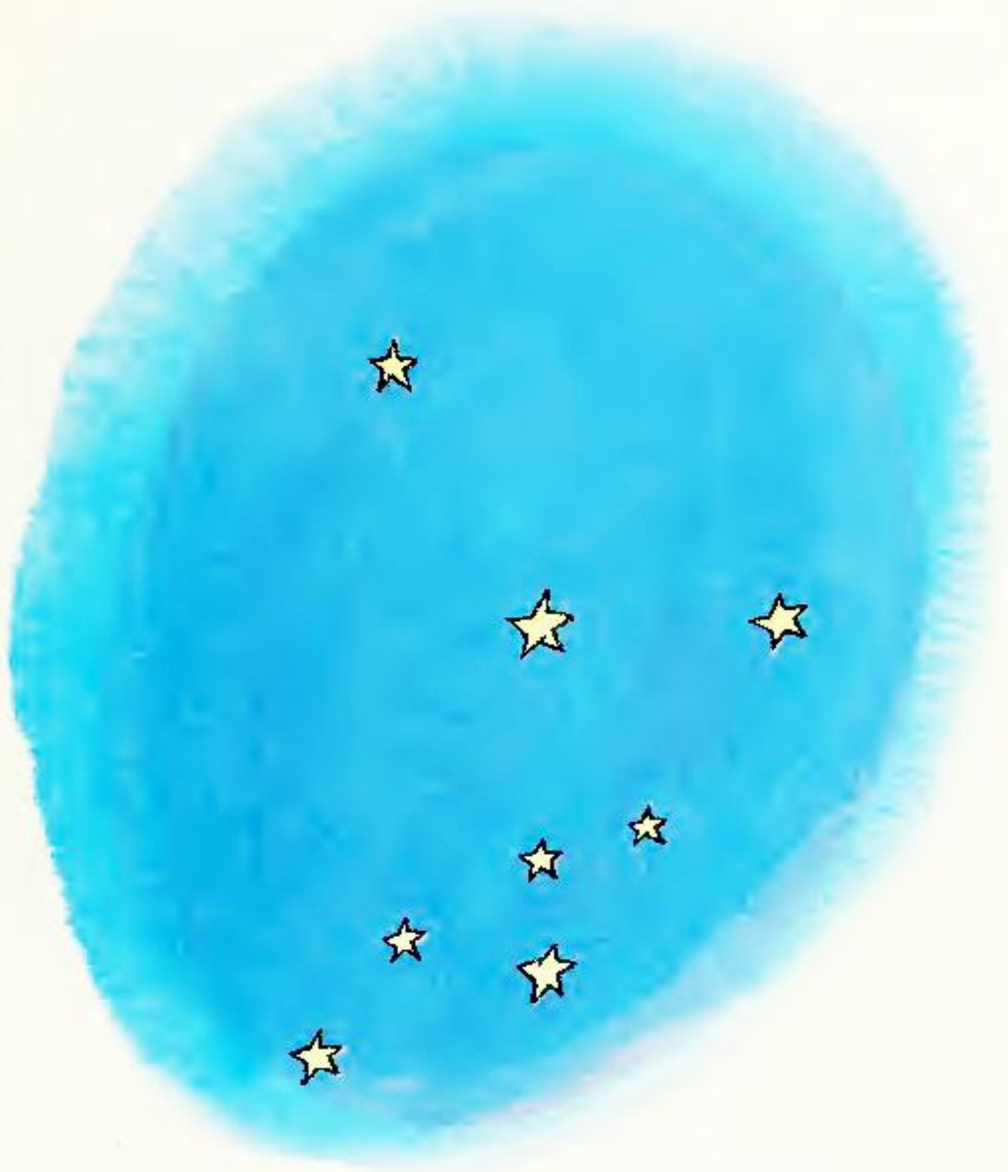

उनके सपनो में......

वे फिर उड़ते फिरते हैं, अपनी दुनिया की सबसे ख़ूबसूरत और सबसे विशालकाय लालटेन में।

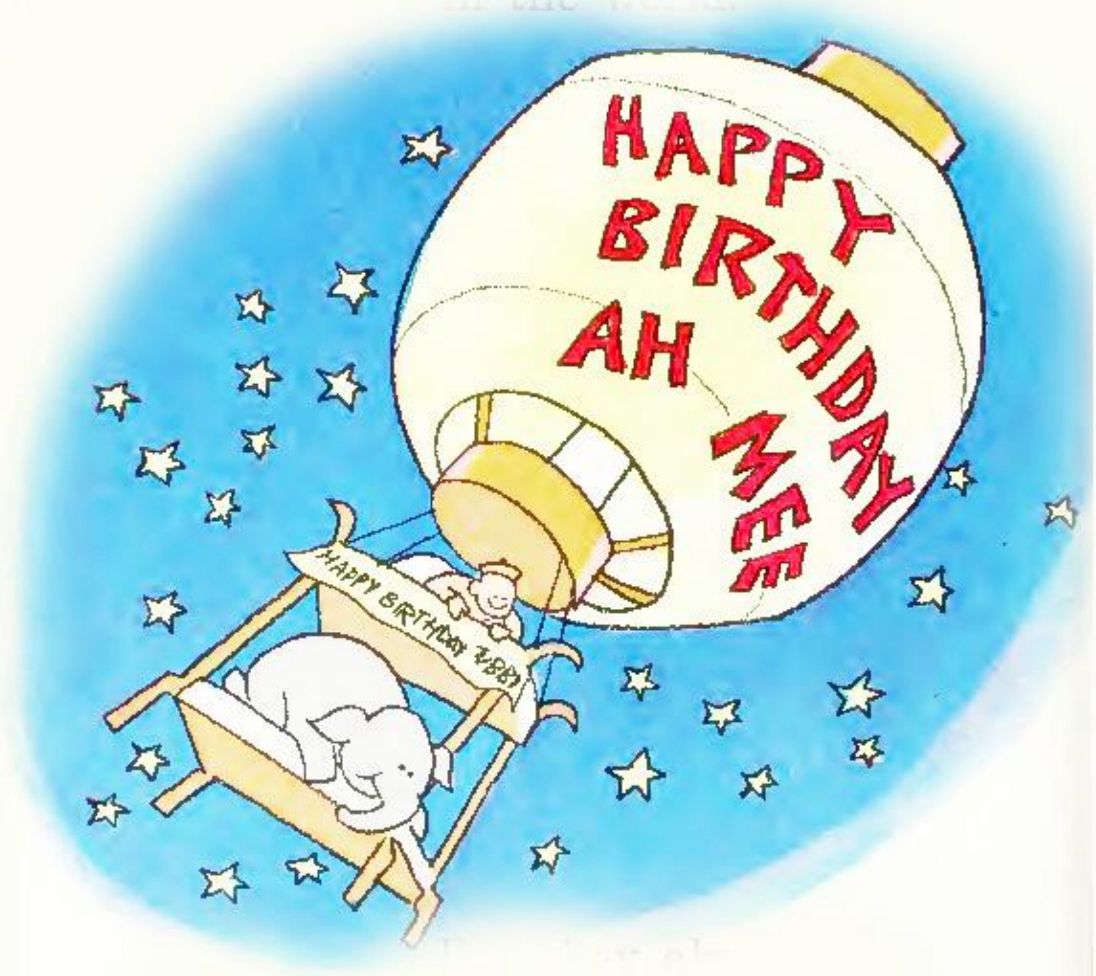

लेकिन हर सुबह वे सही-सलामत घर वापस ज़रूर आ जाते हैं।